UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182832
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83
C51W

Accession No P. G. H1572

Author चेखव

Title वार्ड नम्बर 6. अनु. रामकुमार.

This book should be returned on or before the date last marked below

वार्ड नम्बर छः

वार्ड नम्बर छः

चेखव

प्रगति प्रकाशन
दिल्ली

अनुवादक : रामकुमार

१९५३

प्रोग्रेसिव पबलिशर्ज़, ७/२३, दरयागंज दिल्ली, द्वारा प्रकाशित, और जगजीत पुलैक्ट्रिक प्रेस, दिल्ली, द्वारा मुद्रित।

रोगी

हस्पताल के हाते के एक ओर एक बड़ी सी दूसरी इमारत है जो लगभग चारों ओर से जंगली झाड़ियों, रस्सी बनाने वाले पत्तों और ऊबड़ खाबड़ जंगल से घिरी हुई है। उसकी छत लाल रंग की है, जिसमें टूट रहा है, सीढ़ियां जीर्ण अवस्था में हैं और उन पर घास उगने लगी है, पलास्तर झड़ चुका है। उसका मुख द्वार हस्पताल की ओर है और पिछवाड़ा खेतों की तरफ़ है और सूखे हुए कांटों वाली झाड़ियां उसकी सीमा का चिन्ह हैं। वे नुकीले कांटे, झाड़ियां और स्वयं वह ईमारत ही एक ऐसे शोकग्रस्त वातावरण का प्रतिनिधित्व करते हैं जो केवल हस्पतालों और जेलों में ही देखने को मिलता है।

छोटे से संकीर्ण रास्ते से आ कर, हाल का दरवाजा खोल कर वह बड़ा सा हाल स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगता है जिसमें कितना ही कूड़ा करकट भरा पड़ा है। चटाइयां, फटे हुए गाउनों के चीथड़े, पैजामे, कमीजें, जूते और बूट—सब के सब अस्त व्यस्त ढेरों में पड़े हुए हैं जिनसे वहां की वायु भी दूषित होने लगती है।

इस कूड़े के ढेर के ऊपर अपने मुंह में चौबीस घंटे पाईप लगाये एक बूढ़ा फौजी नीक्ता वहां का चौकीदार बन कर लेटा रहता है। उसका चेहरा बहुत ही अशिष्ट, शराब पीने से फूला हुआ है, उसकी झुकी हुई भौंहें देख कर एक कुत्ते का सा आभास होने लगता है, उसका कद छोटा परन्तु शरीर हृष्ट पुष्ट है परन्तु उसे देख कर कोई प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता और उसकी मुट्ठियों में अभी तक शक्ति है। वह उस वर्ग का एक अंग प्रतीत होता है जो सीधे-सादे, दृढ़ और दूसरों को उकसा देने वाले स्वभाव के होते हैं और जो संसार में आज्ञा पालन की पूजा करते हैं और इसी में अपनी सत्ता को भी उचित

समझते हैं। इसी से अपना कर्त्तव्य निभाते हुए यह दूसरों को पीटते समय उनके मुख, छाती, पीठ और जहां भी उसकी मुट्ठियां पहुंच जायं—वहां प्रहार करता है : और उसका विश्वास है कि इस मार के बिना संसार में कहीं भी शान्ति नहीं रह सकती।

नीक्ता के हाल कमरे के पश्चात तुम एक बड़े, खुले सोने के कमरे के अन्दर घुसते हो जो इस इमारत का शेष भाग है। इस कमरे में दीवारों का रंग मटियाले नीले रंग का है, लकड़ी और कोयले के धुंए से छत काली पड़ गई है मानो किसी बिना चिमनी की झोंपड़ी की छत हो। यह स्पष्ट है कि सर्दियों में यहां आग जलती है और हवा बन्द सी हो जाती है। लोहे की सलाखें लगने से खिड़कियों की शक्ल बहुत विकृत सी हो गई है। फर्श गन्दा और सील से भरा हुआ है। उसके अन्दर पड़ी हुई गोभी की दुर्गन्ध, मरे हुए मच्छरों और अमोनिया (औषधि) की तीव्र दुर्गन्धि आती है। उस कमरे में घुसते समय ये सब दुर्गन्धियां मिलकर ऐसा प्रतीत कराती हैं मानो तुम जंगली जानवरों के किसी पिंजड़े में घुस आये हो।

कमरे में चारों ओर फर्श का स्पर्श करती हुई चारपाइयां रक्खी है। नीले कपड़े पहने हुए और हमारे बाप दादों के समय की टोपियां पहने लोग इन चारपाइयों पर बैठे या लेटे हुए हैं। यह पागलखाना है और ये लोग पागल हैं।

यहां केवल पांच ही मरीज़ हैं। एक किसी बड़े घराने का है परन्तु बाकी निम्न वर्ग के हैं। दरवाज़े के बिल्कुल समीप एक लम्बे से कद का, पतला दुबला, एक छोटे मोटे व्यापारी समाज का सदस्य है। वह बहुत देर तक केवल एक ही बिन्दु की ओर टकटकी लगा कर देखता रहता है। उसकी लाल मुछें हैं और आंसुओं से भरी हुई पलकें हैं और एक हाथ से वह अपने सिर को सहारा दिये रहता है। पागलखाने की पुस्तकों में उसकी बिमारी पित्तोन्माद लिखी हुई है परन्तु वास्तव में वह लकवा की चरम सीमा पर पहुँचा हुआ है। रात

दिन कराहता रहता है, अपना सिर हिलाता है, ठंडी सांसें भरता है और कड़वी मुद्रा में मुस्कुराता है। वह बातचीत में कभी ही हिस्सा लेता हो और प्रायः प्रश्नों का उत्तर देने से इनकार कर देता है। वह मशीन की भाँति खाता और पीता है। उसकी निर्बलता को देख कर, उसके पिचके गाल, और दर्द भरी खांसी से यह अनुमान लगाया जाता है कि यक्ष्मा रोग से वह प्रतिदिन ढलता जा रहा है।

उसके साथ ही एक छोटे से कद का फुर्तीला बुड्ढा आदमी है जिसको नुकीली दाढ़ी है और एक हब्शी की भाँति काले घुघराले बाल हैं। वह सारा दिन या तो एक खिड़की से दूसरी खिड़की के चक्कर लगाता रहता है या चारपाई पर बैठ कर एक टांग दूसरी टांग के ऊपर रख लेता है मानो कोई तर्क हो। वह बैल की भाँति कभी नहीं थकता, और सारा दिन चहकता और फुदकता रहता है या कभी धीमे स्वर में गाया करता है। उसकी बच्चों के समान खुशी और स्फूर्ति रात्रि को भी उसे चैन नहीं लेने देती जब वह भगवान की प्रार्थना करने के लिए उठता है और बंधी हुई मुट्ठियों से अपनी छाती पर प्रहार करता है और दरवाज़ों पर दस्तक देता है। यह मोज़ेका है, एक यहूदी और बेवकूफ़। उसका दिमाग़ बीस वर्ष पहले फिर गया था जब उसकी टोपी बनाने की फैक्टरी आग में जल कर नष्ट हो गई थी।

वार्ड नम्बर छः में रक्खे जाने वाले पागलों में केवल उसी को पागलखाने से बाहिर जाने की आज्ञा है और वह हाते और सड़कों पर भी घूम सकता है। उसे कितने ही वर्षों से यह सुविधा मिली हुई थी और इसका कारण शायद यह था कि वह पागलखाने का सब से पुराना रोगी था और बहुत ही चुपचाप किसी को हानि न पहुँचाने वाला मूर्ख था और जो सड़कों पर कुत्तों और बालकों से घिरा रहता था। अपने पुराने गाउन में शरीर को लपेटे, टोपी सिर पर लगाये और स्लीपर पहने, कभी कभी नंगे पाँव और प्रायः बिना पैजामे के वह

सड़कों पर घूमता है, भीख मांगने के लिए कभी द्वार पर खड़ा हो जाता है या किसी छोटी दुकान के अन्दर घुस जाता है। कभी उसे रोटी मिल जाती है और कभी कुछ पैसे, अतः वह अपने वार्ड को अमीर बन कर वापिस लौटता है। परन्तु वह जो कुछ घर लाता है, वह नीक्ता अपने लिए उस से छीन लेता है। बूढा सैनिक यह काम बड़ी बेदर्दी और क्रोध के साथ करता है, यहूदी की जेबों को उलटते समय वह भगवान से चिल्ला चिल्ला कर कहता है कि वह कभी उसे पागलखाने से बाहिर नहीं जाने देगा और वह सौगन्ध खाता है कि उसके लिए इस उपद्रव से बढ कर घृणामयी वस्तु संसार में दूसरी नहीं है।

मोज़ेका को दूसरों के लिये कोई काम करना बहुत अच्छा लगता है। वह अपने साथियों के लिये पानी भर कर लाता है, जब वे सोने चले जाते है तो उनको लिहाफ़ ओढा देता है और उन से प्रतिज्ञा करता है कि अगली बार वह शहर से सब के लिए कुछ पैसे लायेगा और एक कए नई टोपी बनवा देगा। उसके बाई ओर लकुआ से पीड़ित जो उसका साथी रहता है, उसको चम्मच से भोजन खिलाता है। यह सब काम वह अपने साथियों के प्रति दया या सहानुभूति के भाव से, या मानवता के नाम पर नहीं करता वरण दूसरो का अनुकरण करने से उसको प्रेम है और अपने दाँई ओर रहने वाले पड़ोसी आईवन ग्रोमो के प्रति अनिच्छात्मक अधीनता भी है।

आईवन डिमिट्री ग्रोमो की अवस्था ३३ वर्ष के लगभग है। उसका जन्म एक ऊंचे घराने में हुआ था और वह कानूनी अदालतों में प्रवेशक उच्च पद पर था और फिर सरकार का सेक्रेटरी था; परन्तु अब उसे अपने पकडे जाने और सताये जाने की बीमारी है। अब वह अपनी चारपाई पर इस प्रकार सिकुड़ कर लेटा रहता है मानो रोटियों का कोई पार्सल हो या कमरे के एक कोने से दूसरे और फिर तीसरे की ओर चलता रहता है मानों वह अपने आप को स्थिर नही रखना चाहता, वह सदा घबडाया सा रहता है जैसे

कोई उसे दुःख दे रहा हो, किसी अवर्णनीय आशंका में उसके मुख पर सदा परेशानी के चिन्ह नज़र आते है। हाल में जरा भी खटका हो, बाहिर हाते में धीमी सी आवाज हो, वह उसी क्षण अपना सिर उठा कर बड़े ध्यान से सुनने लगता है। क्या वे उसे पकड़ने के लिए आ रहे है? क्या वे उसको खोज रहे हैं? और उसके चेहरे पर तत्क्षण अस्थिरता और मानसिक पीड़ा के भाव चमकने लगते हैं।

उसके चौड़े, गालों की उभरी हुई हड्डियों वाले चेहरे में एक अजीब सा आकर्षण है और वह उसके पीड़ित, सताये हुए, भयत्रस्त मस्तिष्क का प्रतिबिंब है। उसके उदास मुख पर एक निरालापन और किसी रोग की छाया है, परन्तु बहुत ईमानदारी के साथ इतनी वेदना सहने के पश्चात उसके मुख पर ऐसी कोमल रेखायें चमकने लगी है जो उसकी तीव्र बुद्धि और तर्क शक्ति का आभास देती है और उसकी आंखों में एक तेज चमक है। उसके चरित्र, उसकी नम्रता, उसकी सतर्कता और नीक्ता के अतिरिक्त और सब की बातों को सहने की शक्ति में भी एक आकर्षण है। यदि उसके पड़ोसी के के हाथ से चम्मच या एक बटन गिर जाये तो वह उसी क्षण अपनी चारपाई से उछल पड़ता है और उसे उठा लेता है। जागने पर और अपने बिस्तरे में जाने से पूर्व प्रति सन्ध्या को वह अपने साथियों को नमस्कार करता है।

परन्तु उसका पागलपन उसके मुख की उदासी और निरंतर मानसिक उतार चढ़ाव के अतिरिक्त दूसरे रूपों में भी प्रकट होता है। शाम को वह अपने आप को गाऊन में लपेट लेता है, और कांपता हुआ, अपने दांत कड़ कड़ाता हुआ वह चारपाइयों के बीच में एक कोने से दूसरे कोने में चक्कर लगाता है, उसे ज्वर आया हुआ प्रतीत होता है। अपने दूसरे कैदियों के पास यकायक रूक जाने से और उन को अजीब निगाहों से देखने पर यह बात स्पष्ट है कि वह उनसे कोई बड़ी गम्भीर बात कहना चाहता है, परन्तु फिर यह याद

आने पर कि उसके साथी न सुन सकते है न समझ सकते हैं वह चुप हो जाता है, अधीर होकर अपना सिर हिलाता है और फिर चलने लगता है। परन्तु अन्त में बोलने की भावना इतनी बली हो उठती है कि दूसरी बातों की ओर वह ध्यान नहीं देता और वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ बोलने लगता है। उसके शब्द असंगत, प्रवाहपूर्ण और बेसुध होते हैं, उसको सदा समझा नहीं जा सकता परन्तु उसका स्वर बहुत अच्छा लगता है, उसके प्रत्येक शब्द में तुम पागल और मनुष्य की बात सुनोगे। वह मनुष्य का पतन और उसकी कृतघ्नता, सत्य को कुचलती हुई हिंसा और इस पृथ्वी पर आने वाली सुन्दर जिंदगी की बातें करता है, लोहे की कड़ियों से बन्द खिड़कियाँ उसे प्रतिक्षण शक्ति की मूर्खता और निर्दयता की याद दिलाती है। और वह पुराने, भूले हुए गीतों को मिला कर उनकी धुन गुनगुनाने लगता है।

कभी प्रेम नहीं किया

पन्द्रह वर्ष पूर्व, शहर की सब से अच्छी और मुख्य सड़क पर एक स्वस्थ और उन्नतिशील व्यक्ति ओमो अपने ही मकान में रहता था। ओमो के दो पुत्र थे—सरजे और आईवन। सरजे जब चौथी कक्षा में था तभी यक्ष्मा का शिकार हो गया था और उसकी मृत्यु हो गई थी। उसकी मृत्यु ओमो परिवार की विपत्तियों में सब से पहली थी। सरजे की मृत्यु के केवल एक सप्ताह पश्चात उसके बूढ़े पिता पर जाल साज़ी और जनता का रूपया हड़पने का इलज़ाम लगाया गया, और शीघ्र ही जेल के हस्पताल में मुह पर लाल चिकोते निकलने के पश्चात उसकी मृत्यु हो गई। उसका मकान और घर का सारा सामान निलाम कर दिया गया और आईवन डिमिट्री और उसकी मां के पास एक भी पैसा नहीं रहा।

जब उसका पिता जीवित था तब आईवन डिमिट्री सेंट पीटर्सबर्ग की यूनिवर्सटी में पढा करता था और प्रति मास उसे ६० या ७० रूबल घर से मिल जाते थे और उसे गरीबी का मतलब तक मालूम नहीं था। अब उसे अपनी सारी ज़िंदगी बदल देनी पड़ी। बहुत तड़के से लेकर रात को कितनी ही देर तक वह थोड़ी फीस लेकर लड़कों को पढाया करता था और आर्डर के कागज़ों की नकल किया करता था, परन्तु फिर भी इसे भूखों मरना पड़ता था क्योंकि अपनी सारी कमाई वह अपनी मां को भेज दिया करता था। जीना असम्भव बन गया और आईवन डिमिट्री का स्वास्थ्य और स्फूर्ति दोनों ही समाप्त हो रहे थे, उसने अपनी यूनिवर्सटी की शिक्षा छोड़ दी और वापिस घर लौट आया। दिलचस्पी होने के कारण उसको अपने जिले के स्कूल में ही अध्यापक बना लिया गया, परन्तु उसकी दूसरे अध्यापकों से बनी नहीं, छात्रों को संतुष्ट करने में भी वह असफल रहा और अन्त में उसने नौकरी छोड़ दी। उसकी मां

मर गई। छः महीने तक वह बिना किसी साधन के जीवित रहा, काली रोटी और पानी पी कर अपना पेट भर लेता था और अन्त में अदालत में उसे प्रवेशक की नौकरी मिल गई। इस नौकरी पर वह उस समय तक काम करता रहा जब तक उसकी बीमारी के कारण उसे नौकरी से अलग नहीं कर दिया गया।

अपने छात्र जीवन में भी कभी उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहा। उसका रंग पीला था, पतला दुबला शरीर था और सर्दी लगते ही कोई न कोई रोग अवश्य चिपट जाता था, वह थोड़ा खाता था और नींद भी अच्छी तरह नहीं आती थी। केवल एक गिलास शराब का पी कर उसका सिर घूमने लगता था और वह बेहोश हो जाता था, उसके गिरे हुए स्वास्थ्य ने उसे किसी से मित्रता करने के लिए उत्तेजित किया परन्तु उसके चिड़चिड़े स्वभाव और उसकी सन्देह भरी दृष्टि के कारण वह किसी से घनिष्टता नहीं कर सका और उसके कोई मित्र नहीं थे। अपने दूसरे नागरिकों को वह सदा घृणा की दृष्टि से देखता था, उनकी घोर अज्ञानता और जानवरों की ज़िंदगी देख कर वह ऊब गया था और उनकी निन्दा किया करता था। वह बड़े तीव्र स्वर में ज़ोर से बड़ी लगन के साथ बोला करता था और सदा ही बड़े दुःख, उत्साह या हर्ष की मुद्रा में दिखाई देता था। जब कभी किसी के साथ वह अपनी बातचीत आरम्भ करता तो उसका अन्त सदा एक ही दिशा की ओर होता था, उसकी शिकायत सदा यही रहती थी कि इस शहर में रह कर मनुष्य का दम घुटने लगता है और वह बहुत जल्दी ऊब जाता है, यहां के रहने वाले लोगों के शौक उच्च कोटि के नहीं है और वह बिना मतलब की एक नीरस ज़िंदगी बिताते हैं जिसमें हिंसा, व्यसन और छल फरेब भरा रहता है। दुष्ट और चालाक लोग अच्छा खाते पीते हैं और ईमानदार लोग भूखे मरते हैं। शहर स्कूलों, ईमानदार समाचार

पत्रों, थियेटर, सार्वजनिक भाषण, बौद्धिक शक्तियों का यूनियन बनाने के लिए चिल्लाता है और अब लोगों के जागने का समय आ गया है जब अपने शहर की वास्तविक दशा देख कर वे कांप उठेंगे। अपने दृष्टिकोण से लोगों को देखने के लिए वह बस काला और सफेद व्यक्ति ही देखते थे, हल्के और गहरे रंगों का अस्तित्व उनके लिये नहीं था। उनके लिये मानवता दो भागों में बंटी हुई थी—ईमानदार और बदमाश—उनके बीच में कोई मनुष्य नहीं था। स्त्री और स्त्री के प्रेम के विषय में वह बहुत हर्ष और लगन के साथ बातें किया करता था। परन्तु उसने स्वयं कभी प्यार नहीं किया था।

शहर में उसके घबड़ाने वाले चरित्र और दूसरों में दोष निकालने वाले स्वभाव के कारण लोग उससे स्नेह करने लगे थे और प्यार से "वान्या" कह कर पुकारा करते थे। उसकी स्वभाविक नम्रता, उसकी चैतन्यता, उसकी सफ़ाई, उसकी नैतिक पवित्रता, उसका पुराना कोट, उसका रोगी चेहरा, उसके परिवार पर पड़ी विपत्तियां—इन सब ने मिलकर लोगों के हृदय में उसके प्रति दया और निकटता भर दी थी। इस के अतिरिक्त, वह शिक्षित था और खासा अच्छा अध्ययन कर रक्खा था, अपने शहर में रहने वालों की राय में उसे सब कुछ मालूम था और उनके बीच में उसका पद एक मिश्रित शान की पोथी में कम नहीं था। वह बहुत पढ़ता था। वह घंटों क्लब में बैठा रहता था, घबड़ा कर यकायक अपनी दाढ़ी खुजलाने लगता था और पुस्तकों और पत्रिकाओं के पन्ने उलटने लगता था, उसकी शक्ल देख कर यह अनुमान लगाया जा सकता था कि वह पढ़ नहीं रहा था बल्कि घोट रहा था। फिर भी पढ़ना उसकी एक आदत सी थी क्योंकि वह हाथ में आई किसी भी चीज को उतने ही उत्साह से पढ़ता था चाहे वे पुराने समाचार पत्र या कैलेंडर ही क्यों न हों। घर में वह हमेशा लेट कर पढ़ा करता था।

आईवन पकड़ा गया

पतझड़ की एक प्रातः को आईवन डिमिट्री अपने कोट के कालरों को कानों तक खैंचे धूल भरे मार्ग में आगे बिसटता हुआ किसी एक व्यापारी के घर रुपया लेने जा रहा था। और दिनों की भाँति आज भी प्रातःकाल के समय वह बड़ा उदास सा अनुभव कर रहा था। एक गली में से गुजरते समय उसने दो कैदियों को जंजीरों में बंधे देखा जो बन्दूकें लिए हुए चार सिपाहियों से घिरे हुए थे। आईवन प्रायः कैदियों को देखा करता था और वे उसके मन में दया और घबराहट की भावना भर देते थे। परन्तु आज की मुलाक़ात ने उसके ऊपर एक बड़ा अजीब सा प्रभाव जमा दिया। उसे यकायक ऐसा प्रतीत हुआ मानो उसे भी हथकड़ी पहन कर धूल भरे रास्ते से होकर जेल न जाना पड़े। अपना काम समाप्त करके, जब वह अपने घर वापिस लौट रहा था तो उसकी एक परिचित पुलिस इंसपेक्टर से भेंट हो गई जिस ने उसका अभिवादन किया और उसके साथ कुछ दूर तक सड़क पर चला। उसे पुलिस इंसपेक्टर की इस करतूत पर सन्देह हुआ। घर में कैदियों और बन्दूकें लिए सैनिकों के विचार ही दिन भर उसके दिमाग़ में दौड़दौड़ लगाते रहे और एक प्रकार के आध्यात्मिक भय के कारण न तो वह कुछ पढ ही सका और न उसका मस्तिष्क ठिकाने रहा। शाम को वह बिना आग जलाये बैठा रहा और सारी रात यही सोच कर जागते जागते बिता दी कि कैसे वह भी पकड़ा जा सकता है, उसको हथकड़ियां पहनाई जा सकती हैं और फिर जेल में बन्द किया जा सकता है। वह जानता था कि उसने कोई अपराध नहीं किया है और उसे पक्का विश्वास था कि वह कभी हत्या, चोरी या डाका नहीं डालेगा। परन्तु वह जानता था कि भूले से या बिना इच्छा के कोई अपराध कर बैठना कितना आसान था और झूठी गवाहियों और जजों की गलतियों से किसी को सज़ा दे

देना बहुत आम बात हो गई थी। वे लोग जो दूसरों के दुःखों और विपत्तियों को केवल अपने पद के दृष्टिकोण से ही देखते हैं, जैसे न्यायाधीष, सिपाही, डाक्टर—उनके दिल इस प्रकार कड़े बन चुके है कि यदि वे चाहे भी तो भी वे अपराधियों के साथ नियमानुसार बर्त्ताव करने का लालच नहीं छोड़ सकते। वे उन किसानों के समान है जो अपने मकानों के हाते में भेड़ बकरियां और बछड़ों को मार डालते हैं और उनको उनका खून भी दिखाई नहीं देता। लोगों के साथ आत्माहीन सम्बन्ध स्थापित करके जज केवल यथाविधि आचार कर अपना काम समाप्त कर देता है और एक निरपराध व्यक्ति के नागरिक अधिकार छीन लिये जाते हैं या उसको जेल भेज दिया जाता। इस गंदे मरे हुए छोटे से शहर में—जहां से रेलवे स्टेशन दो सौ वर्स्ट की दूरी पर है वहां भला न्याय और बीच बचाव कराने की आशा कैसे की जा सकती है। जो समाज प्रत्येक हिंसा को ठीक, उचित और आवश्यक समझता है उससे न्याय की आशा करना मूर्खता है। और किसी अपराधी को मुक्त कर देना या इसी प्रकार की कोई साधारण सी दया दिखलाने से एक प्रकार का असंतोष फैल जाता है और हंगामा मच जाता है।

अगले दिन प्रातःकाल के समय आईवन डिमिट्री जब उठा तो उसके माथे पर भय के कारण ठंडी बूंदें चमक रही थीं। उसे विश्वास हो गया कि वह किसी भी क्षण पकड़ा जा सकता है। कल शाम की भयानक भावनाएं उस को किस प्रकार निरंतर घेरे रहीं, उस से स्पष्ट होता है कि उसकी आशंकाओं का कोई ना कोई परिणाम अवश्य निकलेगा। क्या उसके दिमाग़ में ये विचार बिना किसी कारण के आ सकते थे?

एक सिपाही धीरे धीरे उसकी खिड़की के पास से गुजरा; इसका कारण कुछ न कुछ अवश्य होगा। दो आदमी साधारण वस्त्र पहने उसके गेट के सामने आ कर खड़े रहे। वे चुप क्यों थे?

कुछ समय तक आईवन डिमिट्री ने अपने दिन और रातों इसी दारुण यंत्रणा में काट दी। प्रत्येक व्यक्ति जो उसकी खिड़की के पास या मकान के हाते में आता वह उसकी दृष्टि में एक भेदिया या जासूस था। प्रत्येक दिन बारह बजे के लगभग मुख्य कांस्टेबल अपने घर से पुलिस विभाग जाता हुआ उस सड़क से गुज़रता था और हर दिन आईवन डिमिट्री यह अनुभव करता था कि कांस्टेबल आज कुछ जल्दी म है और उसके चेहरे के भाव भी बड़े अजीब से हैं। वह शायद सारे शहर में बहुत शीघ्र ही यह सूचना देगा कि इस शहर में एक बड़ा भारी अपराधी आया हुआ है। आईवन डिमिट्री प्रत्येक शब्द सुन कर कांप उठता था, हाते के द्वार का खटखटाना सुन कर भयभीत हो जाता था और जब कभी कोई नया व्यक्ति उसकी मकान मालकिन से मिलने आता तो उसकी मानसिक वेदना उसकी चरम सीमा पर पहुंच जाती थी। बाजार में किसी हथियारबंद सिपाही को देख कर वह मुस्कुराने लगता था, सीटी बजाता था और उदासीनता के भाव से उसे देखता था। रात रात भर, अपने पकड़े जाने के भय से वह अपनी आँखें कभी बन्द नहीं करता था परन्तु सतर्कता के साथ खुर्राटे भरने का शब्द किया करता था जिससे मकान मालकिन समझे कि वह सो रहा है; क्योंकि यदि किसी व्यक्ति को रात को नींद नहीं आती तो इससे स्पष्ट हो जाता है कि उसकी आत्मा उसे वेदना पहुँचा रही है और इससे उस पर सन्देह किया जा सकता है। वास्तविकता और युक्ति-संगत तर्कों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसका भय उसकी बेवकूफी और अशांति के कारण है और विकसित दृष्टिकोण से देखने पर उस व्यक्ति के पकड़े जाने और जेल जाने में कोई विशेष रूप से डरने की बात नहीं है जिसकी आत्मा पवित्र हो। परन्तु जितना ही अधिक देर तक ठंडे दिल से वह इस पर सोचता उतनी ही अधिक आध्यात्मिक वेदना उसे होने लगती थी; अपनी कोशिशों से उसे उस साहसी व्यक्ति का उदरहरण याद आता था जो घने

बियाबान जंगलों में अपना रास्ता बनाना चाहता था, अपने यंत्रों से जितने ही अधिक परिश्रम से वह काम करता था उतने ही घने और शक्तिशाली पौधे फिर उग आते थे, अन्त में अपने प्रयास को असफल जान कर उसने काम करना बन्द कर दिया और उसने अपने आप को भय और निराशा के सागर में डुबा दिया।

वह अन्य लोगों से दूर दूर रहता था और उसका स्वभाव भी दूसरों से अलग रहने का हो गया था। पहले से ही उसके काम घृणापूर्ण थे परन्तु अब तो वे एक प्रकार से असहय से हो गये। वह सोचता था कि कोई उसकी जेब में रुपया छिपा देगा और फिर उस पर रिश्वत खाने का इलज़ाम लगा देगा या वह सरकारी कागज़ों में ग़लती कर देगा जिसका मतलब जाली काम करने का होगा या उससे वह रुपया खो जायेगा जो उसे सौंपा गया था। उसका दिमाग़ कभी इतना खोज करने वाला और चतुर नहीं हुआ था जैसा कि अब अपनी स्वतंत्रता और आदर सम्मान के खो जाने के कारण ढूंढने में लगा हुआ था। दूसरी ओर बाहरी जगत में उसकी दिलचस्पी और उत्सुकता धीरे धीरे कम होती गई, वह किताबों के प्रति अपना प्रेम खो बैठा और उसकी स्मरण शक्ति प्रतिदिन उससे दूर होती गई।

अगले बसन्त जब बर्फ पिघल गई तो कब्रिस्तान के पीछे एक तंग रास्ते में एक बूढ़ी स्त्री और एक बालक की लाशें पाई गईं जिन पर प्रहार किये गये मालूम देते थे। शहर के लोगों को इस समस्या की चर्चा के अतिरिक्त और किसी विषय पर बातें करना अच्छा नहीं लगता था : वे अज्ञात ख़ूनी कौन है ? अपने ऊपर से लोगों का सन्देह मिटाने के लिए आईवन डिमिट्री सड़कों पर घूमा करता था और मुस्कुराया करता था जब कभी अपने परिचितों से मिलता तो पीला पड़ जाता था और शर्माने लगता था, वह उनसे अत्यन्त उग्रता से,

कहता था कि निर्बल और निहत्थो की हत्या करने मे अधिक घृणित काम दूसरा नहीं है। परन्तु अपने इस दिखावे से वह बहुत जलदी ही तंग आ गया और कुछ सोच समझ के पश्चात उसने निश्चय किया कि मकान मालकिन के तहखाने में छिप जाने से अच्छा काम दूसरा नहीं है। यद्यपि तहखाने में सर्दी के कारण उसकी हड्डियां अकड़ गई, परन्तु फिर भी वह सारा दिन, अगली रात और अगला दिन वहीं छिपा रहा। उसके पश्चात वह अंधेरा हो जाने पर चुपके चुपके अपने कमरे में खिसक आया। दिन हो जाने तक वह कमरे के बीचोबीच निस्तब्ध हो कर खड़ा रहा और सुनता रहा। सूर्य निकल आने पर कुछ कारीगरों ने मकान के द्वार पर घंटी बजाई। आईवन डिमिट्री को मालूम था कि वे रसोई घर मे एक नया चूल्हा लगाने आये है परन्तु उसके अन्दर बैठे हुए भय के भूत ने राय दी कि कांस्टेबल भेस बदल कर आये है। वह चुपचाप अपने कमरे से बाहर निकल आया और भय और आशंका से घबड़ा कर बिना टोपी एंव कोट पहने सड़कों पर भागने लगा। उसके पीछे पीछे कुत्ते भौंकते हुए दौड़े और एक स्त्री ने उसे आवाज लगाई। वायु उसे अपने कानों मे सीटियां बजाती हुई जान पड़ी और उसे ऐसा जान पड़ा कि समस्त संसार की बिखरी हुई हत्याएं एक बन कर शहर मे उसका पीछा कर रही है।

उसको पकड़ लिया गया। उसकी मकान मालकिन ने एक डाक्टर को बुला भेजा। डाक्टर ऐन्ड्री ऐफीमिच रेगीं—जिसके विषय में अधिक हम आगे चल कर सुनेंगे—ने उसके सिर पर ठंडी पट्टियां रखने का इलाज बतलाया, एक प्रकार की शराब की कुछ बूंदें पीने के लिए बतलाई और यह कह कर चला गया कि अब वह फिर कभी नही आयेगा क्योंकि लोगों को पागल बनने से रोकना उचित नहीं है। घर में उसका इलाज करने के सारे साधन उपस्थित नहीं थे अतः आइवन डिमिट्री को हस्पताल भेज दिया गया और उसे रोगियों

के वार्ड में रक्खा गया। वह रात को नहीं सोता था, अपने आप में नहीं रहता था और दूसरे बीमारों की दिनचर्या में बाधा डालता था, अतः जल्दी ही डाक्टर ऐंड्री येफीमिच की सहायता से उसे वार्ड नम्बर छः में भेज दिया गया।

एक वर्ष गुज़रने से पहले ही उस शहर के लोग आईवन डिमिट्री को भूल चुके थे, और मकान मालकिन ने उसकी किताबों के ढेर को एक स्लेज में रख कर ऊपर से पड़दा डाल कर बाहिर रख दिया जहां बच्चों ने उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये।

पांचवां

जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूँ, आईवन डिमिट्री के बाईं ओर मोज़ेका यहूदी रहता था, उसके दाईं ओर एक बहुत मोटा दुनियां की भाँति गोल किसान रहता था जिसके चेहरे पर नीरस बिना किसी मतलब के भाव सदा विद्यमान रहते थे। इस मन्द बुद्धि वाले पेट्रू ने एक गन्दे जानवर की भाँति बहुत पहले से ही अपनी सोचने और अनुभव करने की शक्ति गँवा दी थी। वह ऐसी तीव्र सांसें छोड़ता था जिससे उसका दम घुटने का आभास मिलता था। जब कभी नीकता को उसकी सेवा करने का अवसर मिलता था तब वह उसे बुरी तरह पीटा करता था, अपनी सारी शक्ति के साथ बिना अपनी मुट्ठियों की चिन्ता किये वह उस पर प्रहार किया करता था, उसका यह पीटना इतना भयानक नहीं था क्योंकि आदि हो जाने के कारण इस का डर तो समाप्त हो चुका था—परन्तु भय इसलिए लगता था कि वह बेवकूफ़ जानवर चिल्ला कर या अपने को बचाने के लिए इधर उधर दौड़ कर या अपनी आँखों में उसका भाव लाकर उसके प्रहारों की प्रतिक्रिया का आभास नहीं देता था बल्कि एक भारी टीन के पीपे की भाँति इधर उधर झूला करता था।

वार्ड नम्बर छः का पांचवां और अन्तिम कैदी एक शहर निवासी था जो किसी समय डाकखाने में चिट्ठियां छांटने का काम करता था। वह छोटे से कद का दुबला पतला भूरे बालों वाला व्यक्ति था जिसकी नम्र मुद्रा थी परन्तु चेहरे पर एक प्रकार का तीखापन था। अपनी चतुर और शांत आंखों से वह संसार को प्रसन्नता और निष्कपट भाव से देखा करता था और उसके पास कोई मूल्यवान और सुन्दर रहस्य छिपा हुआ था। अपने तकिये और चटाई

के नीचे उसने कोई चीज छिपाई हुई थी जिसे दिखलाने से वह इन्कार कर देता था, इस कारण से नहीं कि उसको उसे खो देने का भय था परन्तु वह लज्जा का अनुभव करता था। कभी कभी वह खिड़की तक चला जाता था और अपने साथियों की ओर पीठ करके वह अपनी छाती से कोई चीज चिपटाये रखता था और बड़े ध्यान से उसे देखता था, परन्तु यदि कोई उसके पास पहुंच जाता तो वह घबड़ा जाता था और उसे छिपा लेता था। परन्तु उसके रहस्य का अनुमान लगाना कठिन नहीं था।

"मुझे बधाई दो।" वह आईवन डिमिट्री से कहा करता था। "मुझे बहुत बड़ा ईनाम मिला है। नियमानुसार तो यह ईनाम केवल विदेशियों को ही दिया जाता है परन्तु कुछ कारणों से उन्होंने मेरे साथ विशेष रियायत की है।" और फिर अपने कंधे हिला कर कहता मानो उसे सन्देह हो रहा हो —"यह तो तुमको मानना पड़ेगा कि तुमने मुझ से इसकी आशा नहीं की थी।"

"तुम्हारी बात मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आती।" आईवन डिमिट्री उदास स्वर में कहता। "अब नहीं तो थोड़े दिनों बाद जानते हो मुझे क्या मिलेगा?" वह रहस्यमय मुद्रा में आंखें मटकाता हुआ कहता—"मुझे अवश्य ही स्वीडेन का पोल स्टार मिलेगा। उस तरह के पारितोषिक के लिए चेष्टा करनी ही चाहिए। एक श्वेत क्रास और काला रिबन, कितना सुन्दर होता है।"

विश्व के किसी भी स्थान में जिंदगी शायद इतनी नीरस नहीं है जितनी कि इस भाग में। प्रातःकाल ही उस लकवा के रोगी और मोटे किसान को छोड़ कर सब मरीजों को एक बड़ी सी टब में स्नान करना पड़ता है जो कमरे में रख दी जाती है, फिर अपने गीले शरीर को अपनी गाऊन से पोंछना होता

है । उसके पश्चात वे टीन के लोटों में चाय पीते हैं जो नीक्ता हस्पताल से उनके लिए लाता है। इसके बाद वे सड़ी गोभी का रस और दलिया खाते हैं और शाम को प्रातःकाल के बचे हुए दलिये का ही भोजन उनको करना पड़ता है । दिन और रात्रि के भोजन के बीच में वे लेट जाते हैं, सो जाते हैं, खिड़कियों से बाहर झांकते हैं और एक कोने से दूसरे कोने के चक्कर लगाते हैं ।

और यही हर एक दिन का कार्यक्रम है । यहां तक कि वह पत्र छांटने वाला भी हमेशा इन्ही पुराने ईनामो की चर्चा किया करता है ।

वार्ड नम्बर छः में नई सूरतें कभी ही देखने को मिलती हैं । सालो पहले डाक्टर ने आज्ञा दी थी कि कोई भी नया मरीज़ अब यहां दाखिल न किया जाय और इस संसार में बहुत कम ऐसे लोग हैं जो पागलखानों में अपना मन बहलाव करने जाते है।

परन्तु दो महीनो में एक बार सेमयां लज़ारी नाम का एक नाई अवश्य आता है । नीक्ता की सहायता से वह रोगियो के बाल काटता है और जितनी बार रोगी लज़ारी के शराब पिये हुए चमकते हुए मुख को देखते हैं, उतनी ही बार उनके मन में जीवित रहने की कोई भी इच्छा नहीं रहती ।

इस के अतिरिक्त और कोई भी इस वार्ड में नहीं घुसता । प्रत्येक दिन रोगियों को केवल नीक्ता की ही शक्ल देखनी पड़ती है । परन्तु अन्त में हस्पताल में एक अजीब अफ़वाह फैली कि अब डाक्टर वार्ड नम्बर छः के अन्दर जाने लगा है ।

डाक्टर

यह सचमुच ही एक बड़ी निराली सी अफ़वाह थी।

डाक्टर ऐंड्री येफीमिच रेगीं सचमुच ही अपनी जिंदगी में एक उच्च कोटि का व्यक्ति था। लोगों का कहना था कि अपने यौवन काल के आरम्भ में ही वह बहुत धार्मिक प्रकृति का था और उस का इरादा बड़े होकर गिरजाघर की सेवा ही करने का था। परन्तु १८६३ में अपने स्कूल की पढाई समाप्त कर के जब उसने धार्मिक शिक्षा लेने की योजना बनाई तो उसके पिता—जो एक सर्जन और डाक्टर थे—उन्होंने उसके विचारों की हंसी उड़ाई और स्पष्ट रूप से अपने पुत्र को सूचित कर दिया कि ऐंड्री पादरी बना तब वह सदा के लिए उसका त्याग कर देंगे। यह कहानी सत्य है या मनगढ़न्त यह कहना असम्भव है परन्तु यह निश्चित है कि ऐंड्री येफीमिच ने कितनी ही बार यह स्वीकार किया है कि उसे डाक्टरी या दूसरे विज्ञानों में कभी दिलचस्पी नहीं थी।

यह बात भी पक्की थी कि वह कभी पादरी नहीं बना वरण अपनी यूनिवर्सटी में उसने डाक्टरी का कोर्स समाप्त किया। उसके मुख या आचार व्यवहार से उसके धार्मिक एंव आध्यात्मिक व्यक्तित्व का आभास नहीं मिलता था। डाक्टरी के आरम्भ में उसके जो विचार थे वही अन्त में भी थे।

देखने में वह भारी डील डौल का और व्यवहार में उतना ही असभ्य था जैसा कि एक किसान होता है। उसकी सफ़ाचट दाड़ी, उसके सीधे बाल और उसके शक्तिशाली भद्दी प्रकार से गढे हुए शरीर को देख कर किसी प्रसिद्ध सड़क पर बसे हुए छोटे मोटे होटल के ज़िद्दी और असंयमी मालिक की याद आ जाती थी। उसका कद लंबा था और चौड़े कंधे थे, बहुत बड़े बड़े हाथ

और पैर थे जिन्हें देख कर ऐसा प्रतीत होता था कि वे किसी व्यक्ति के शरीर में से प्राण निकालने की क्षमता रखते हैं फिर भी उसके चलने से कोई शब्द नहीं होता था, उसकी चाल धीमी और सतर्क होती थी। जब कभी किसीसे एक संकीर्ण रास्ते में उसकी मुलाकात हो जाती थी तो वह सदा एक किनारे को हट जाता था और बड़े नम्र और मीठे स्वर में कहता था—"क्षमा कीजियेगा!"

ऐंड्री येफीमिच की गर्दन में एक छोटी सी गिल्टी निकली हुई थी जिसमें वह कलफ़ वाले कालर नहीं पहन सकता था, वह सदा पतले रेशम या मुलायम कपड़े की कमीज़ पहना करता था। किसी भी तरह उसके वस्त्र डाक्टरों की वेशभूषा नहीं दिखाई देते थे। वह एक ही सूट को दस वर्षों तक पहने रहता था और जब कभी किसी यहूदी की दूकान से नये कपड़े खरीदने जाता तो सदा वे पुराने कपड़ों की भाँति घिसे हुए और सिकुड़े हुए दिखाई देते थे। एक ही कोट में वह अपने रोगियों को देखा करता था, खाना खाता था और सार्वजनिक पार्टियों में शामिल होता था। यह सब वह कंजूसी के कारण नहीं करता था बल्कि उसको कृत्रिम प्रदर्शन से एक प्रकार की घृणा थी।

जब ऐंड्री येफीमिच पहले पहल हस्पताल का डाक्टर बन कर इस शहर में आया तो उस 'चन्दे की संस्था' की दशा इतनी गिरी हुई थी जिस की कल्पना नहीं की जा सकती। तेज़ दुर्गन्धि के कारण वार्डों, दरवाज़ों और यहां तक कि हाते की खुली हवा में भी साँस लेना असम्भव था। हस्पताल के पुरुष, नर्सें और उनके बच्चे रोगियों के साथ ही कमरों में सोते थे। सब लोगों की यह शिकायत थी कि मकड़ियों, खटमलों और चूहों के कारण हस्पताल में रहना असम्भव था। आपरेशन विभाग में आपरेशन करने के केवल दो चाकू थे, थर्मामीटर का कोई पता नहीं था और गुसलखानों को आलू जमा करने के स्टोर बना लिया था। सुपरिंटेंडेंट, चौकीदार और सहकारी सब बीमारों का लूट्य करते थे और ऐंड्री येफीमिच से पहले डाक्टर के विषय में यह कहा जाता

था कि वह हस्पताल की दवाइयां चुपके चुपके बेचा करता था और कुछ चुनी हुई नर्सों और स्त्री रोगियों को इकट्ठा करके उसने अपना एक 'हरम' बना रक्खा था। शहर के सब लोग इन समाचारों से परिचित थे और कभी कभी उनको फैलाने में अतिशयोक्ति की जाती थी। दूसरे वे इस ओर से बहुत उदासीन थे और रोगियों की शिकायतों को यह सोच कर अधिक महत्व नहीं देते थे कि लगभग सभी रोगी या तो छोटे मोटे व्यापारी या किसान है जो अपने घरों में इससे भी गई गुज़री दशा में रहते है कि उन्हें शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं है, इस प्रकार के लोगों को बढ़िया बढ़िया भोजन की आशा नहीं करनी चाहिए। दूसरे लोग यह कहते थे कि किसी भी छोटे मोटे शहर के पास इतने साधन नहीं होते कि बिना सरकार की आर्थिक सहायता के वे एक अच्छे हस्पताल का खर्चा सह सकें, और उन्हें परमात्मा का धन्यवाद देना चाहिए कि उनके शहर में एक खराब हस्पताल है तो। सरकार इस कारण से शहर में हस्पताल नहीं खोलती कि एक हस्पताल पहले से ही उपस्थित है।

जब ऐंड्री येफीमिच ने पहली बार हस्पताल का निरीक्षण किया तब उसने पहली ही दृष्टि में हस्पताल की गिरी हुई दशा को भाँप लिया। वह जान गया कि यह हस्पताल में रहने वालो के स्वास्थ्य के लिए कितना खतरनाक है वह इस परिणाम पर पहुँचा कि रोगियो को छुट्टी देकर हस्पताल को बन्द कर देना ही सर्व श्रेष्ठ है। परन्तु वह जानता था कि इसको क्रियात्मक रूप देने के लिए केवल उसी की इच्छा पर्याप्त नहीं है। फिर उसने यह सोचा कि यदि शारीरिक और नैतिक गन्दगी को एक स्थान से निकाल कर बाहिर कर दिया जाये तो वह किसी दूसरे स्थान पर अड्डा जमा लेगी। उस समय की प्रतीक्षा करना आवश्यक है जब यह गन्दगी स्वयं अपने आप को नष्ट कर देगी। एक और विचार ने भी उसका साथ दिया कि यदि लोग एक हस्पताल खोलते है और उसके सारे दोषों को सहन करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि अवश्य

हो उन्हें हस्पताल की आवश्यकता है। निःसन्देह इस प्रकार की घृणा आवश्यक बन जाती है और समय के साथ साथ इसके परिणाम लाभदायक होंगे जैसे खाद डाल कर धरती उपजाऊ बन जाती है। और संसार में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जिस में आरम्भ में दोष नहीं होते।

अतः अपना काम संभाल लेने के पश्चात एंड्री येफीमिच ने हस्पताल के सब दोषों की ओर कृत्रिम उदासीनता दिखलाई। उसने नौकरों और नर्सों से केवल इतना ही कहा कि वे वार्डों में न सोयें और औज़ारों के दो नये सेट खरीद लाया। परन्तु उसने सुपरिंटेंडेंट, चौकीदार और सहकारी को अपने अपने स्थानों पर ही रहने दिया।

एंड्री येफीमिच को बुद्धिमान और ईमानदार लोगों से बहुत प्रेम था। उसमें न तो वैसा चरित्र था और न ही उसे विश्वास था कि उसमें ऐसी शक्तियां हैं जो एक बौद्धिक और ईमानदार जिंदगी को जन्म देने की क्षमता रखती हैं। उसने किसी को आज्ञा देना, किसी पर दबाव डालना कभी नहीं सीखा था। ऐसा प्रतीत होता था कि अपनी आवाज़ उठाने की या किसी को हुक्म देने की उसने सौगन्ध खा रक्खी थी..... ..."दो" या "लाओ" शब्द का उपयोग करना भी उसके लिए कठिन था जब वह भूख का अनुभव करता तो अस्थिर होकर खांसता और अपने रसोइये से कहता—"यदि मुझे एक प्याला चाय का मिल जाये" या "मैं भोजन के विषय में सोच रहा था।" उसके पास इतनी शक्ति नहीं थी कि वह सुपरिंटेंडेंट से अपनी चोरियां बन्द करने के लिए कहे, या उसे नौकरी से निकाल दे या उसके खून चूसने वाले दफ्तर को ही बिल्कुल बन्द कर दे। जब उसको धोखा दिया जाता था या उसकी तारीफें की जाती थीं या उसके हस्ताक्षर के लिए वे हिसाब किताब उसे दिये जाते थे जिनको वह जानता था कि वे झूठे हैं, तब उसका चेहरा लाल हो जाता था और वह मन ही मन अपने को अपराधी मान लेता था परन्तु फिर भी उन पर दस्तखत कर देता था। और जब रोगी

उससे शिकायत करते थे कि वे भूखे रहते हैं या नर्सें उनके साथ बुरा व्यवहार करती हैं तो वह घबड़ा जाता था और एक अपराधी की भांति हकलाने लगता था।

"अच्छी बात है.. ..मै इस मामले की खोज बीन करूंगा—निःसन्देह यहां कोई ग़लत फ़हमी हो गई है।"

पहले पहल एंड्री येफीमिच बहुत लगन के साथ काम करता रहा। वह प्रातः से लेकर भोजन के समय तक रोगियों को देखता, आपरेशन करता और यहां तक कि वह प्रसव सम्बन्धी इलाज भी करता। वह इस बात के लिए प्रसिद्ध हो गया कि स्त्रियों और बच्चों के रोग ठीक करने में उसको विशेष ज्ञान है परन्तु वह बहुत शीघ्र ही अपने काम की नीरसता और असफलता से ऊब गया। किसी दिन उसके पास तीस रोगी आते है, अगले दिन पैंतीस और फिर उनका नम्बर चालीस हो जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक दिन और प्रत्येक वर्ष उनका नम्बर बढता जाता है। फिर भी शहर मे मरने वालो की संख्या घटती नहीं, और रोगियों का नम्बर भी कम नहीं होता। प्रातः काल मे लेकर भोजन करने तक के बीच के कुछ घंटों मे चालिस रोगियो की सच्ची रूप मे सहायता करना असम्भव था। दूसरे शब्दों मे वह अपनी इच्छा के विपरीत एक धोकेबाज़ बन गया। प्रतिवर्ष बारह हज़ार लोगों की सेवा करने का तात्पर्य था कि बारह हज़ार लोगों को धोखा दिया गया। जिन रोगियों की दशा चिन्ताजनक होती थी उन्हें वार्डो मे रख कर, अच्छी तरह से डाक्टरी अनुसार उन का इलाज करना असम्भव था क्योंकि यहां न कोई नियम थे और न विज्ञान था यदि वह अपनी फिलासफी छोड़ बैठता और उचित रूप से अन्य डाक्टरों की भांति डाक्टरी करता तब भी उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ता क्योंकि सर्वप्रथम सफाई और ताज़ी वायु की आवश्कता है न कि गन्दगी की, पौष्टिक भोजन की आवश्यकता है न कि सड़ी हुई गोभी के रस की, ईमानदार सहकारियों की आवश्कता है न कि चोरो की।

और यदि मृत्यु इन सब लोगों का प्राकृतिक और कानूनी अन्त है तो फिर लोगों के मरने में बाधा क्यों डाली जाये ? यदि कोई व्यापारी या छोटा मोटा सरकारी नौकर पांच वर्ष तक और जीवित रहता है या नहीं—इससे संसार का कुछ बनता बिगड़ता नहीं। हम डाक्टरी विज्ञान का यह मतलब समझने का कृत्रिम प्रदर्शन करते हैं कि उसका ध्येय सब शारीरिक वेदनाओं का अन्त करना है, परन्तु हम अपने आप से यह प्रश्न नहीं पूछ सकते : वेदना का अन्त क्यों किया जाय ? सर्वप्रथम हम को यह बतलाया जाता है कि वेदना और पीड़ा से मनुष्य पूर्णता की ओर पहुंचता है दूसरे यह स्पष्ट है कि यदि लोग गोलियां और दवाई खा कर अपने दुःखों का अन्त कर सकें तो लोग धर्म और फिलासफी को भी तिलांजली दे देंगे जिनमें अब तक उन्हें न केवल सांत्वना बल्कि प्रसन्नता भी मिलती रही है। अपनी मृत्यु से पूर्व पुशकिन को बड़ी दारूण वेदना सहनी पड़ी थी। ह्येने कितने ही वर्षों तक लकवा के शिकार की अवस्था में चारपाई पर पड़ा रहा था। तब फिर केवल ऐंड्री येफिमिच या मतरेना सवींशिन की पीड़ा में बाधा क्यों डाली जाये, जिनकी जिंदगी का कोई मतलब नहीं है और यदि उनके जीवन में दुःख और वेदना न हो तो उनकी जिंदगी उतनी ही शून्य होगी जैसी कि एक छोटे से जन्तु की होती है।

इस प्रकार के तर्कों से पराजित होकर ऐंड्री येफीमिच अपने हाथ घुटनों पर गिरा देता था और हस्पताल में अपना प्रतिदिन का जाना बन्द कर देता था।

भाग्य

उसकी जिंदगी इस प्रकार बीत रही थी। प्रातःकाल आठ बजे के लगभग वह अपना नाश्ता करने के लिए उठता उसके पश्चात वह अपने पढ़ने वाले कमरे मे जाकर पढ़ता या हस्पताल की ओर चल देता था। हस्पताल मे छोटे से अंधेरे दरवाजे में रोगी उसकी प्रतीक्षा किया करते थे। मोटे मोटे जूते पहने हुए, ईंटों के फर्श पर खट खट शब्द करते हुए हस्पताल के नौकर और नर्सें इधर उधर चक्कर लगाया करते थे। अपने ढीले ढाले वस्त्र पहने दुर्बल और क्षीण काय रोगी लगड़ाते लंगड़ाते वहां आते थे, गन्दगी और कूड़ाकरकट के ढेर और लाशें बाहिर ले जाई जाती थीं। उसी वातावरण में बच्चे चिल्लाते थे और दवाइयें तैयार की जाती थी। ऐड्री येफीमिच जानता था कि ज्वर पीड़ित, निर्बल रोगियो के लिए इस प्रकार का वातावरण असहय है परन्तु वह क्या कर सकता था? रोगियों को देख ने वाले बाहिर के कमरे में उसका सहकारी सर्जे सर्जिय उसका स्वागत करता था। वह एक छोटे से कद का भारी डीलडौल का व्यक्ति था, उसकी दाढ़ी नहीं थी वह हमेशा साफ सुथरा रहता था, उसका मुख कोमल और आचार व्यवहार मे भी कुशल था। सर्जे सर्जिय सदा इस प्रकार के वस्त्र पहना करता था जिनमें वह एक सर्जन की अपेक्षा पार्लियामेंट का सदस्य अधिक दिखाई देता था। शहर में उसकी डाक्टरी अच्छी चलती थी और उसका विश्वास था कि वह डाक्टर से अधिक जानता है जिसकी शहर में कोई प्रैक्टिस नहीं है। कमरे के एक कोने में एक केस मे धार्मिक मूर्तियां रखी थी जिनके सामने एक बड़ा सा लैंप था दीवार पर पादरियों के चित्र, एक प्रसिद्ध गिरजे का दृश्य और मुरझाये फूलों की मालाऐं टंगी हुई थीं। सर्जे सर्जिय धार्मिक स्वभाव का व्यक्ति था और कमरे में मूर्तियां उसी के खर्चे पर लगाई गई थीं। प्रत्येक रविवार को उस की आज्ञा से एक रोगी भजन गाया करता था और उसके

समाप्त होने पर सर्जे सर्जिच धूपदान लेकर प्रत्येक वार्ड में उसकी सुगन्धि फैला कर उसे पवित्र कर देता था। रोगियों की संख्या अधिक होती थी और समय कम। अतः केवल कुछ प्रश्न पूछ कर और कास्टरायल या मलने की दवा बतला कर ही रोगियों का निरीक्षण समाप्त हो जाता था। ऐंड्री येफीमिच अपने सिर को हाथों का सहारा दिये, अपने विचारों में खोया हुआ मशीन की भाँति प्रश्न पूछा करता था और सर्जे सर्जिच उसके पास बैठा हुआ कभी कभी बीच में एक आध बात कह डालता था।

"हम बिमार पड़ते हैं या हमारी कोई हानि होती है।" वह कभी कभी कहा करता था—"इस का कारण यह है कि हम भगवान की प्रार्थना बहुत कम करते हैं।"

इस समय ऐंड्री येफीमिच कोई आपरेशन आदि नहीं किया करता था, उसकी आदत भी छूट गई थी और खून को देख कर ही उसका मन बेचैन हो उठता था। जब कभी किसी बच्चे का गला देखने के लिए उसे बच्चे का मुख खोलना पड़ता और यदि बच्चा अपने हाथों से अपना बचाव करने के लिए उसका विरोध करता, तब डाक्टर अपना मुंह दूसरी ओर फेर लेता था और उसकी आंखों में आँसू भर आते थे। वह बहुत जल्दी ही उसका इलाज बतला देता था और उसकी मां को जितनी जल्द हो सके उतनी जल्दी अपने बच्चे को ले जाने का संकेत कर देता था।

वह बहुत जल्दी ही रोगियों के डर जाने से, उनकी बेबसी से, कृत्रिम प्रदर्शन करने वाले सर्जे सर्जिच की निकटता से, दीवारों पर टंगे हुए चित्रों से, और अपने ही प्रश्नों से ऐसे प्रश्न जो वह बिना किसी परिवर्तन के बीस वर्षों से अपने रोगियों से, पूछता आया है—बहुत जल्दी ऊब गया। और कभी कभी वह केवल पांच छः रोगियों को देख कर ही हस्पताल से चल देता था और फिर उसके सहकारी को ही दूसरे रोगियों का निरीक्षण करना पड़ता था।

यह सोच कर वह प्रसन्न होता था और परमात्मा को धन्यवाद देता था कि उसकी कोई प्राईवेट प्रैक्टिस नहीं है और कोई उसके कार्यक्रम में बाधा नहीं डालेगा, और ऐंड्री येफीमिच घर लौट कर अपने पढ़ने वाली मेज़ पर जा बैठता था और पढ़ना आरम्भ कर देता था। वह बहुत पढ़ता था और पढ़ते समय उसे सदा सुख मिलता था। उसका आधा वेतन पुस्तकें खरीदने में खर्च हो जाता था और उसके फ्लैट के छः कमरों में से तीन कमरे किताबों और पुराने समाचार-पत्रों से भरे पड़े थे। इतिहास और फिलासफ़ी उसके प्रिय विषय थे। परन्तु डाक्टरी विज्ञान संबंधी प्रकाशनों में से वह केवल "डाक्टर" पत्रिका मंगवाता था जिसको वह सदा सब से बाद में पढ़ता था। प्रतिदिन वह लगातार कुछ घंटों तक पढ़ता रहता था और उसमें वह कभी थकता नहीं था। वह आईवन डिमिट्री की भाँति जल्दी जल्दी बहुत उत्सुकता से नहीं पढ़ता था, वरण धीरे धीरे पढ़ता हुआ उन पैराग्राफों पर ठहर जाता था जो उसे अच्छे लगते थे, या जिनको वह नहीं समझता था। उसकी पुस्तकों के पास एक शराब की बोतल और एक नमक लगा हुआ खीरा या जल में भीगा हुआ सेब रक्खा रहता था। हर आधे घंटे के पश्चात वह प्याले में शराब उंडेलता था और किताब से बिना अपनी दृष्टि हटाये उसे पी जाता था और फिर किताब पर आँखें जमाये ही वह खीरे का एक टुकड़ा मुंह में रख लेता था।

तीन बजे वह सतर्क होकर रसोई घर के दरवाज़े के पास जाकर खांसता था और कहता था: "द्रुश्का, मैं खाने के विषय में सोच रहा था....."

बुरी तरह से परोसे हुए साधारण से भोजन के पश्चात ऐंड्री येफीमिच अपने हाथ छाती पर रक्खे सोचता हुआ अपने कमरे में चहलकदमी करने लगता था। कभी कभी रसोई घर का द्वार चरचरा कर खुलता था और द्रुश्का का लाल नींद से भरा हुआ चेहरा दिखाई देता था। "ऐंड्री येफीमिच, क्या

तुम्हारा बीयर पीने का समय हो गया ?" वह व्यग्रता से पूछती थी। "नहीं, अभी नहीं," वह उत्तर देता था। "मैं थोड़ी देर बाद फिऊंगा।"

शाम को मिखेल एवीरिंच (पोस्टमास्टर) आ जाता था। सारे शहर में यही एक व्यक्ति था जिसके साथ बातें करके ऐंड्री येफीमिच कभी ऊबता नहीं था। मिखेल एवीरिंच किसी समय गाँव का एक धनी सज्जन मनुष्य था और फौज में रह चुका था। परन्तु अपने आप को बरबाद करके उसने डाकखाने में नौकरी कर ली जिससे बुढापे में उसे भीख न मांगनी पड़े। उसका चमकदार गठा हुआ शरीर था, भूरे रंग की दाढी थी, उच्च कोटि का शिष्टाचार था और बहुत ऊंची मीठी आवाज़ थी। जब डाकखाने में आये हुए लोग कभी उसका विरोध करते या उससे सहमत न होते या बहस करने लग जाते तो मिखेल एवीरिंच का चेहरा लाल हो जाता था, वह कांपने लगता था और चिल्ला कर कहता—"चुप हो जाओ।" जिससे लोगों में यह भावना समा गई थी कि डाकखाना भय का स्थान है। मिखेल एवीरिंच को ऐंड्री येफीमिच के साथ बातें करने में बड़ा आनन्द आता था और वह उसके हृदय की विशालता और उसके विचारों का आदर करता था। परन्तु शहर के दूसरे लोगों को अपने से नीचा समझ कर वह उनके साथ नम्रता का व्यवहार नहीं करता था।

"लो, मैं आ गया।" वह आकर बातचीत आरम्भ करता था। "तुम्हारा क्या हाल है मेरे मित्र ?..... परन्तु शायद तुम मुझ से ऊब जाते हो ? ओह..... ?"

"बिल्कुल इस से उलटी बात है। मुझे प्रसन्नता हुई।" डाक्टर उत्तर देता था—"मैं हमेशा तुम्हें देख कर प्रसन्न होता हू।"

पढ़ने वाले कमरे के सोफ़ा पर दोनों मित्र बैठ जाते थे और कुछ देर तक चुपचाप सिगरेट पीते रहते थे।

"द्रुश्का, यदि हमें थोड़ी सी बीयर मिल जाती तो....." डाक्टर ऐंड्री येफीमिच कहता।

पहली बोतल दोनों चुपचाप समाप्त कर देते। डाक्टर अपने विचारों में खोया रहता और मिखेल एवीरिंच की प्रसन्न और स्फूर्तिमय मुद्रा रहती थी मानों उसे कोई बहुत दिलचस्प बात सुननी हो। डाक्टर ही पहले बातचीत आरम्भ करता था।

"कितनी लज्जा की बात है!" वह धीमे स्वर में धीरे धीरे कहता, बात करते समय वह अपने मित्र की ओर नहीं देखता था, किसी से भी बातें करते वक्त वह कभी उस व्यक्ति की ओर नहीं देखता था। "मिखेल एवीरिंच, कितनी बुरी बात है कि सारे शहर में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो बुद्धिमानों जैसी दिलचस्प बातें करे। हम लोगों के लिए यह बड़ा भारी अभिशाप है। जिनको बुद्धि वर्ग कह कर पुकारा जाता है, वे भी कभी साधारण लोगों की श्रेणी से ऊपर नहीं उठते। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि उनके बौद्धिक विकास का दर्जा साधारण लोगों से ऊंचा नहीं है।"

"तुम बिल्कुल ठीक कहते हो, मैं तुम से पूर्ण रूप से सहमत हूं।"

"जैसा कि तुम भी जानते हो।" डाक्टर ने अपनी बारी आने पर अपनी पुरानी बात को जारी रखते हुए कहा "तुम स्वयं जानते हो कि मानव बुद्धि के ऊंचे स्तर के अतिरिक्त संसार की प्रत्येक वस्तु महत्वहीन और बेदिलचस्प है। बुद्धि जानवर और मनुष्य के बीच की दीवार है, इससे मनुष्य को अपनी दिव्यता की याद आती रहती है और कुछ हद तक उसे अपनी जिंदगी में अमरता का अभाव नहीं खटकता। इसके परिणाम स्वरूप केवल बुद्धि ही उसके

आनंद का स्रोत है। हम जब यह कहते हैं कि हमें अपने चारों ओर बुद्धिमान लोग दिखाई नहीं देते, उनका स्वर सुनने को नहीं मिलता तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि हमें सच्ची प्रसन्नता प्राप्त नहीं हुई। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारे पास पुस्तकें हैं परन्तु यह जीवित लोगों से बातचीत करने से सर्वथा भिन्न है। मैं एक तुलना देता हूं यद्यपि यह उतनी उपयुक्त तो नहीं है। पुस्तकें साथ देती हैं परन्तु बातचीत करना संगीत के बराबर है।"

"यह सर्वथा सत्य है।"

इसके पश्चात एक प्रकार का सन्नाटा छा गया। रसोई घर से बुढ्ढा बाहर निकल आई, वह अपने सिर को हाथों का सहारा दिये थी, उसके मुख पर मूर्खता भरी पीड़ा के भाव थे। वह दरवाजे पर खड़ी बातचीत सुन रही थी।

"ओह" मिखेल एवीरिच ने एक आह भरी—"आज के युग में बुद्धि-जीवियों की खोज करना व्यर्थ है।"

और उसने पुराने दिनों का वर्णन करना आरम्भ किया जब जिंदगी कितनी विकसित, सुखदायी और दिलचस्प थी, कैसे रूस के बुद्धिमान लोग प्रज्वलित हो रहे थे और आदर सम्मान और मित्रता के विचारों को कैसा उंचा स्थान दिया जाता था। बिना लिखा पढी किये हुए रुपया लोगों को उधार दे दिया जाता था और विपत्ति में पड़े हुए मित्र को सहायता न देना कितना लज्जाजनक समझा जाता था। वे सेना के प्रस्थान, कैसी नई नई घटनायें, कैसी लड़ाइयां, कैसे मित्र और कैसी स्त्रियां थीं! कौकेशस—कितना सुन्दर देश है। उसकी सेना के कमान्डर की पत्नी—कैसी विचित्र औरत थी! जो आफिसर की वर्दी पहन कर बिना किसी को साथ लिये अकेली रात को पहाड़ों में घूमा करती थी। लोग कहते थे कि वहां गांवों के किसी युवराज के साथ उसका रोमांस चल रहा है।

"हे भगवान, हम सब पर दया रखना।" इुष्का ने दीर्घ सांस लेते हुए कहा।

"कितना अंधाधुंध पीते थे और किस प्रकार खाया करते थे। कैसे उद्दण्ड सिपाही थे।" एंड्री येफीमिच के कानों में शब्द अवश्य पहुँच रहे थे परन्तु वह सुन नहीं रहा था। वह किसी अन्य विषय पर सोच रहा था और बीयर पीता जाता था।

"मुझे सदा बुद्धिमान लोगो के स्वप्न दिखाई देते हैं और मैं कल्पना में ही उन से बातचीत किया करता हूँ।" उसने मिखेल एवीरिंच की बात को काटते हुए यकायक कहा। "मेरे पिता ने मुझे बहुत अच्छी शिक्षा दी परन्तु उस समय के प्रचलित विचारों ने मुझे डाक्टर बनने के लिए बाधित किया। मुझे ऐसा मालूम पड़ता है कि यदि मैंने उनकी आज्ञा का उल्लंघन किया होता तो आज मैं बौद्धिक आंदोलन के बीच में होता—शायद किसी ऐसी संस्था का सदस्य होता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि बुद्धि स्वयं ही अक्षत नहीं है बल्कि परिवर्तन शील है परन्तु तुम जानते हो कि मैं क्यों इस की पूजा करता हू। जिन्दगी स्वयं एक सन्ताप पूर्ण धोखा है। जब एक ध्यान देने वाला व्यक्ति बड़ा हो जाता है और उसकी चेतना परिपक्व हो जाती है, तब वह अपने आप को एक पिंजड़े में बन्द पाता है जिसमे से बाहिर निकलने का उसे कोई मार्ग दिखाई नहीं देता। किसी एक घटना से, अपनी इच्छा से बिना कोई सलाह लिए वह इस संसार में जन्म ले लेता है......क्यों? वह अपने अस्तित्व का उद्देश्य और महत्व जानना चाहता है, परन्तु इसके उत्तर में उसे चुप्पी या बे सिर पैर के जवाब मिलते हैं, वह द्वार खटखटाता है परन्तु वह खुलता नहीं, और मृत्यु भी उसकी इच्छा के विरुद्ध उसका आलिंगन करती है। और जिस प्रकार एक ही दुर्भाग्य के शिकार जब आपस मे मिलते है तो अपना दुःख भूल जाते हैं, उसी प्रकार जिंदगी की व्याख्या करने वाले और उधारहरणों के बल पर नियमो का अनुमान लगाने वाले

लोग जब स्वतंत्र विचारों की अदला बदली में अपने दिन काटते हैं तब वे उस जाल को देख नहीं पाते जिसमें वे रहते हैं। इस प्रकार बौद्धिक विचारों का उपजना एक ऐसा आनन्द है जिसकी बराबरी कोई और नहीं कर सकता।

"बिल्कुल सत्य है।"

और फिर भी अपने साथी की ओर से अपनी दृष्टि हटाये, ऐंड्री येफीमिच नम्रस्वर में ठहर ठहर कर उन बुद्धिमान लोगों और उनके साथ बातचीत करने के आनन्द का वर्णन करता और मिखेल एवीरिंच ध्यान से उसकी बात सुन कर कहता "यह बिल्कुल सत्य है।"

"तब तुम आत्मा की अमरता पर विश्वास नहीं करते?" पोस्टमास्टर ने पूछा। "नहीं मिखेल एवीरिंच, मैं विश्वास नहीं करता और विश्वास करने का कोई कारण भी नहीं है।"

"मैं भी यह स्वीकार करता हूं कि मुझे इसकी अमरता पर सन्देह है। फिर भी यह विचार मेरे मन में आता है कि मैं कभी मरूंगा नहीं। आओ, मैं अपने आप से कहता हूं बूढ़े बुढ़ऊ, अब तेरे मरने का समय आ गया है परन्तु मेरे हृदय की एक आवाज़ इसका उत्तर देती है इस पर विश्वास मत करो, तुम कभी नहीं मरोगे।"

९ बजे के लगभग मिखेल एवीरिंच बिदा ले लेता है। ज्योंही वह हाल में अपना ओवरकोट पहनता है, तभी वह एक सांस ले कर कहता है हा, हमारे भाग्य ने हमें किस रेगिस्तान में बो दिया है। और इससे बुरा और क्या हो सकता है कि हमें यहीं मरना पड़ेगा हुँ।

विचार

जब उसका मित्र उससे विदा लेकर चला जाता है तब ऐंड्री येफीमिच अपनी मेज़ के सामने बैठ जाता है और फिर पढ़ना आरम्भ कर देता है। सन्ध्या और फिर रात्रि की निस्तब्धता में कोई बाधा नही पड़ती, ऐसा प्रतीत होता है मानो समय अपने ही स्थान पर स्थिर खड़ा है और फिर नष्ट हो जाता है और उसके साथ साथ डाक्टर का भी अन्त हो जाता है। आखिर में एक पुस्तक और हरे रंग का लैंप का शेड बाकी रह जाते हैं। और जब वह बुद्धिमान लोगों के सफल अनुसंधानों के विषय में सोचता है तब उसका किसानों की भांति असभ्य चेहरा धीरे धीरे भावुकता और प्रसन्नता से चमकने लगता। ओह, मनुष्य अमर क्यो नही है? वह पूछता है। मनुष्य के दिमाग़ और समस्याओं को हल करने की शक्ति, उसकी दृष्टि, बोलने की शक्ति उसकी चेतना और उसकी विकसित और उन्नत बुद्धि का क्या अन्त होगा। क्या इन सब को अन्त में मिट्टी में मिल जाना होगा और फिर हज़ारों वर्षों तक बिना किसी उद्देश्य के सूर्य के प्रकाश में ये मिट्टी में दबे रहेंगे? उसकी शक्तियों को नष्ट करके उसे सूर्य के चारों ओर घुमाने के लिए क्या यह आवश्यक है कि ऊंचे स्वर के दिव्य मस्तिष्क वाले मानव को जन्म देकर और फिर उसे मिट्टी में मिला कर उसका उपहास किया जाये?

वस्तु (Matter) की अमरता। इस प्रकार की धोखे से भरी हुई अमरता से अपने आप को आश्वासन देना कितनी बड़ी कायरता है! प्रकृति में अदृष्य प्रवृत्तियां परस्पर काम करती हैं परन्तु उनसे उनकी बेवक़ूफ़ी का ही परिचय मिलता है, मूर्खता में चेतना और संकल्प दोनों होते हैं परन्तु इन

प्रवृत्तियों में दोनों में से कुछ भी नहीं होता। फिर भी लोगों से कहा जाता है शांति, रक्खो, मिट्टी में घुलने वाला तुम्हारा अस्तित्व दूसरी शक्तियों को जन्म देगा। दूसरे शब्दों में तुम मूर्खता से भी अधिक बेवकूफ रहोगे। वह कायर व्यक्ति जिस को अपने आदर सम्मान की भावना की अपेक्षा मृत्यु का अधिक भय है वह इस ज्ञान से अपने आप को सांत्वना दे सकता है कि समय आने पर उसका शरीर एक बार पुनः घास और पत्थरों में जीवित होगा। वस्तु की अविनाशता में अमरता को खोजने वाला उतना ही विचित्र है जितना कि वायलिन के उस बक्स के ऊज्वल होने की भविष्यवाणी करना जिसकी सुन्दर और मूल्यवान वायलिन टूट चुका हो।

घड़ी जब घंटे बजाती है तब ऐंड्री येफीमिच अपनी कुर्सी में पीठ का सहारा लगता है और अपनी आँखे बन्द करके सोचने लगता है। पुस्तक में पढे हुए उच्च विचारों से प्रभावित होकर वह अपने वर्त्तमान और अतीत पर एक दृष्टि डालता है। अतीत तो प्रतीकारक है, उसके विषय में न सोचना ही अच्छा है और वर्त्तमान भी अतीत के समान है। वह जानता है कि इस समय भी जब वह सूर्य और ठंडी पृथ्वी के विषय में सोच रहा है, उसके मकान की लाईन में ही हस्पताल की इमारत में, दर्द से कराहते हुए और गन्दगी से पीड़ित रोगी लेटे हुए हैं, कीड़े मकोड़ों और वेदना से हाय हाय करने वाला व्यक्ति सो नहीं सकता, दूसरे के मुख पर मुंहासे निकले हुए हैं और कस कर पट्टियां बंधने के कारण वह चिल्लाता है, दूसरे रोगी नर्सों के साथ ताश खेल रहे हैं और शराब पीते जाते हैं। इसी वर्ष बारह हजार लोगों को धोखा दिया गया है। पिछले बीस वर्षों के समान हस्पताल का सारा का सारा संगठन चोरी, धोखा, कपट, पक्षपात और छल पर निर्धारित है। सारा हस्पताल एक अनैतिक संस्था बना हुआ है और इसमें रहने वालों के स्वास्थ्य का खतरा है। और ऐंड्री येफीमिच जानता है कि वार्ड नम्बर छः

की कड़ियों के भीतर नीक्ता अपने मुक्कों से रोगीयों को पीटता है और उसके बाहिर मोज़ेका सड़कों पर घूम कर भीख मांगता है।

फिर भी वह जानता है कि पिछले पचीस वर्षों में डाक्टरी कला में एक क्रान्ति हुई है। जब वह यूनिवर्सटी में पढ़ता था तो उसे ऐसा प्रतीत होता था कि रसायनविद्या और अध्यात्मविद्या बहुत शीघ्र डाक्टरी के क्षेत्र पर अपना प्रभाव जमायेंगी। परन्तु अब रात को वह जो पुस्तकें पढ़ता है उनमें इसकी सफलताओं और प्रगति को देख कर प्रभावित होता है, आश्चर्य चकित होता है और कभी कभी उल्लास में उछल पड़ता है। कैसी क्रान्ति है! कैसी आश्चर्य जनक उन्नीत है। उस एंटीसेप्टिक का धन्यवाद है जिसकी सहायता से प्रतिदिन आपरेशन किये जाते हैं और जिन्हें महान पिरोगोफ असम्भव समझा करता था, और भी कितनी बड़ी बड़ी बीमारियां जो कभी असाध्य समझी जाती थी, आज उनका इलाज बड़ी आसानी से हो रहा है। मानसिक रोग—उनका विभाजन और फिर उनकी जांच पड़ताल करने के विभिन्न तरीके और फिर उनके उपाय, पहले समय के तरीकों में कितना घोर परिवर्तन हुआ है। अब पागलों को सदा ठंडे पानी में नहीं रखा जाता उन्हें पहनने के लिये केवल सीधी वास्कटें ही नहीं दी जातीं, उनके साथ भी मनुष्यों की भांति व्यवहार किया जाता है और ऐंड्री येफीमिच ने समाचार-पत्रों में यहां तक पढ़ा था कि उनके अपने विशेष ड्रामें, मनोरंजन और नृत्य होते हैं। वह अच्छी तरह जानता है कि आज के संसार में वार्ड नम्बर छः जैसी घृणापूर्ण संस्था उसी ज़हर में सम्भव है जहां से रेलवे स्टेशन दो सौ वर्स्ट की दूरी पर है और जहां मेयर और कौंसिलर अर्धशिक्षित व्यापारी हैं जो डाक्टर को पादरी समझते हैं जिस पर बिना कोई आलोचना किए सारा भार छोड़ देना चाहिए चाहे वह अपने रोगियों को पिघला हुआ टीन ही क्यों न दवाई के रूप में पिला दे। किसी भी शहर में जनता और प्रेस बहुत दिनों पहले इस नरक के टुकड़े टुकड़े कर डालते।

"परन्तु अन्त में ?" ऐंड्री येफीमिच अपनी आँखें खोल कर पूछता है—इसमें अन्तर ही क्या हुआ ? ऐंटीसंप्टिक, कोच और पासचर आदि दवाइयों से समस्या का हल तो हुआ नहीं। रोग और मृत्यु अब भी संसार में हैं। पागलों को नृत्य और ड्रामे दिखा कर उनका मनोरंजन किया जाता है परन्तु फिर भी उनको जेलों में बंद रक्खा जाता है.....दूसरे शब्दों में यह सब कुछ लोगों का अभिमान और उनकी मूर्खता है और वियना के सब से उन्नत हस्पताल और यहां के हस्पताल में वास्तव में कोई अन्तर नहीं है।

परन्तु सन्ताप और ईर्ष्या की भावनाओं के आने से उदासीन नहीं रहा जा सकता। थकान और ऊब जाने से ही ऐसे विचार आते हैं। ऐंड्री येफीमिच का सिर पुनः पुस्तक पर झुक जाता है, वह अपने सिर को आराम से अपने दोनों हाथों से पकड़ लेता है और सोचता है :

"मैं बुरे काम में फंसा हुआ हूँ और मैं उन लोगों से वेतन लेता हूं जिन्हें मैं धोखा देता हूँ। मैं एक ईमानदार मनुष्य नहीं हूँ—परन्तु अलग से मेरा कोई अस्तित्व नहीं है, मैं एक आवश्येक सामाजिक कुरीति का केवल एक भाग हूँ इस जिले के सब अफसर खराब है और बिना कोई काम किये अपना वेतन पाते है। दूसरे शब्दों मे मैं इस बेईमानी का कारण नहीं हूँ, बल्कि समय—यदि मैं दो सौ वर्ष पहले पैदा होता तो एक दूसरा आदमी होता।"

जब घड़ी तीन के घंटे बजाती है तो वह अपना लैंप बुझा देता है और अपने शयनागार में चला जाता है परतु सोने की उसकी इच्छा नहीं होती।

सहकारी

दो वर्ष पूर्व हस्पताल के कर्मचारी बढ़ाने के लिए सरकार ने बड़ी उदार बन कर तीन सौ रूबल प्रति वर्ष खर्चने स्वीकार किये जब तक वह शहर में अपना हस्पताल न बनाले। अतः उन्होंने ऐंड्री येफीमिच का हाथ बंटाने के लिए जले के एक डाक्टर फिदोरिच खोबोफ को भेज दिया। उसकी आयु तीस से कम थी, वह लम्बे कद का गेहुंआ रंग का नवयुवक था, छोटी छोटी आँखें और गालों की हड्डियां उभरी हुई थीं। उसे देखने से स्पष्ट रूप से पता चलता था कि वह ऐशीयाटिक रूस से आया हुआ है। जब वह शहर में आया तो उसके पास फूटी कौड़ी भी न थी, केवल एक छोटा सा सूटकेस ही उसका सारा सामान था और उसके साथ एक कुरूप जवान लड़की थी जिसे उसने अपनी रसोई पकाने वाली नौकरानी बतलाया। इस नौकरानी के साथ उसका बच्चा भी था। खोबोफ एक नुकीली टोपी और ऊंचे जूते पहने था और सर्दियों में एक छोटा सा फर का कोट भी पहना करता था। उसने शीघ्र ही पुराने सहकारी सर्जे सर्जिय से मित्रता कर ली और हिसाब किताब रखने वाले का परिचय भी प्राप्त कर लिया परन्तु शेष कर्मचारीयों से उसने घनिष्ठता नहीं की और उनको रईस कह कर उनका तिरस्कार किया। उसके पास केवल एक ही पुस्तक थी "१८२१ में वियाना के हस्पताल के नुस्खे" और हस्पताल आते समय वह सदा उसको अपने साथ ले आता था। उसे ताश खेलने का शौक नहीं था और शाम का समय वह क्लब में बिलियर्ड खेल कर व्यतीत करता था।

खोबोफ सप्ताह में दो बार हस्पताल का चक्कर लगाता था, वार्डों का निरीक्षण करता था और बाहिर से रोगियों को देखता था। ऐंटीसिप्टिक, दवा पिलाने के गिलास तथा दूसरी आवश्यकताओं के अभाव से वह परेशान हो

उठता था, और ऐंड्री येफीमिच के नाराज होने के भय से वह हस्पताल में कोई नई धारा नहीं बहाना चाहता था। वह ऐंड्री येफीमिच को पुराना घाघ समझता था और उसका विचार था कि उसके पास बड़ी भारी जायदाद है और वह मन ही मन में उससे ईर्ष्या करता था। वह बहुत खुशी से उसका पद लेने को तैयार हो जाता।

मुझे रिहा करो

बसन्त में मार्च के अन्त में एक दिन शाम के समय—जब बर्फ पिघल चुकी थी और हस्पताल के बाग में पक्षियों का कलरव गूंजने लगा था—डाक्टर द्वार पर खड़ा अपने मित्र पोस्टमास्टर से विदा ले रहा था, उसी समय वह यहूदी मोजेका अपना सामान बटोरे हाते में आया। उस के सिर पर टोपी नहीं थी, और बिना मोजों के पैरों में वह रबड़ के जूते पहने था और अपने हाथ में पैसों का एक छोटा सा थैला लिये था।

"मुझे एक कोपेक दो?" उसने सर्दी में कांपते हुए डाक्टर से कहा, वह हंस रहा था।

ऐंड्री येफीमिच किसी के मांगने पर कभी उसको मना नहीं कर सकता था अतः उसने दस कोपेक उसे दे दिये।

"कितनी बड़ी भारी गलती है!" उसने यहूदी की नंगी टांगों और पतली पतली ऐड़ियों को देख कर सोचा —"मेरे विचार में ये गीली हैं?"

दया और घबड़ाहट की भावनाओं से वशीभूत होकर वह मोजेका के पीछे पीछे अन्दर गया और निरन्तर उसके गंजे सिर, उसकी ऐड़ियों को देखता रहा। जब डाक्टर अन्दर पहुंचा तो नीक्ता कूड़े के ढेर से उछल कर सीधा खड़ा हो गया। "नमस्कार, नीक्ता।" डाक्टर ने नम्रता से कहा—" यदि तुम इस व्यक्ति को बूटों की एक जोड़ी दे दो ..., मेरा मतलब ... इसे सर्दी लग सकती है .... " "अच्छी बात है हजूर, मैं सुपरिंटेंडेंट से पूछूंगा।"

"कृपया, उससे मेरा नाम लेकर कहना। कहना कि मैंने तुमसे यह बात कही थी।" वार्ड का दरवाजा खुला हुआ था। आईवन डिमिट्री—जो

अपनी चारपाई पर लेटा हुआ था और उस अपरिचित स्वर को सुन कर भयभीत हो रहा था—उसने अचानक डाक्टर का स्वर पहचान लिया। वह क्रोध में झुंझलाया, अपनी चारपाई से कूद पड़ा और कमरे के बीचो बीच भागा, उसका मुख क्रोध और प्रतिहिंसा से तमतमा रहा था और वह अपनी आँखों से डाक्टर को घूर रहा था।

"यह डाक्टर है।" उसने जोर से चिल्ला कर हंसते हुए कहा—"आखिरकार—भगवान, मैं तुझे धन्यवाद देता हूं कि डाक्टर ने यहां आकर हमें सम्मनित किया, ओ अपराधी राक्षस !" उसने चिल्लाकर कहा, उसके चेहरे पर क्रोध की ऐसी भावनायें थी जो पहले हस्पताल में कभी देखी नहीं गई थीं। उसने जोर से अपने पैर धरती पर पटकते हुए कहा —"इस राक्षस को मार दो, नहीं नहीं इसका मरना ही काफी नहीं है। इसे कोठरी में बन्द करके इसक सांस घुट जाने दो।"

ऐंड्री येफीमिच ने उसकी बात सुनी। उसने वार्ड में झांका और नम्रता से पूछा—"किसलिए ?"

"किसलिए ! आईवन डिमिट्री चिल्लाया, उसके मुख पर डाक्टर को सजा देने की भावना थी और वह अपने गाऊन को खेंच रहा था "किसलिए ! चोर !" उसने निराशा और थकान के स्वर में कहा और अपने होठों को इस प्रकार चबाया मानों वह उस पर थूकना चाहता था।

"झूठे डाक्टर, जल्लाद।"

"शान्त हो जाओ।" ऐंड्री येर्फीमिच ने अपराधी की भाँति मुस्कुराते हुए कहा—"मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने कभी कोई वस्तु नहीं चुराई। मुझे ऐसा दिखाई देता है मानो तुम मुझ से नाराज हो। मैं तुमसे

प्रार्थना करता हूं कि शान्त हो जाओ और मुझे बतलाओ कि तुम मुझे क्यों मारना चाहते हो ?....."

"मुझे यहां पर कैद कर रखा है, इसलिए।"

"तुम बिमार हो, इसलिये मैंने तुम्हें यहां बन्द किया हुआ है।"

"हां, मै बीमार हूं ! लेकिन हजारों पागल आदमी स्वतंत्र बने बाहिर घूमते हैं, उन्हें तो कोई परेशान नहीं करता क्योंकि तुम अपनी अज्ञानता में उन्हें पहचान नहीं सकते। तुम, तुम्हारा सहकारी, सुपरींटेंडेंट और हस्पताल के दूसरे कर्मचारी—तुम सब के सब बुद्धू हो और तुम्हारा नैतिक चरित्र इस में से पतित से पतित व्यक्ति से भी गिरा हुआ है। तब तुम्हारे बदले हमें क्यों यहां पर बन्द किया हुआ है ? यह कहां का न्याय है ?" "यह नैतिकता या न्याय का प्रश्न नहीं है। यह सारा परिस्थितियों का खेल है। जो व्यक्ति यहां एक बार आ जाता है, वह यहीं बन्द रहता है ; और जो यहां नहीं आता वह स्वतंत्र होकर बाहर घूमता है। यही सारा मामला है। इस बात के लिए कि मैं एक डाक्टर हूँ और तुम एक पागल आदमी हो न्याय या नैतिकता की जिम्मेदारी नहीं है—परन्तु केवल परिस्थितियां .... "

"यह सब व्यर्थ की बातें मै नहीं समझता।" आईवन डिमिट्री ने अपनी चारपाई पर बैठते हुए कहा।

डाक्टर भी उपस्थिति में नीक्ता मोजेका की तलाशी लेने से डरता था अतः मोजेका अपनी चारपाई पर शहर से भीख में मांगा हुआ सामान सजा रहा था—रोटी के टुकड़े, कागज और हड्डियां, और सर्दी से कांपते हुए गुनगुनाने के स्वर में बातें कर रहा था। ऊपर से वह ऐसी कल्पना कर रहा था मानों वह अपनी दूकान सजा रहा हो।

"मुझे रिहा कर दो।" आईवन डिमिट्री ने कहा। उसका स्वर कांप रहा था।

"मैं रिहा नहीं कर सकता।"

"क्यों?"

"क्योंकि यह मेरी शक्ति से परे की बात है। अपना न्याय तुम स्वयं ही करो यदि मैं तुम्हें रिहा कर भी दूं तो उसका क्या लाभ होगा? सोचो कि मैंने तुम्हें छोड़ दिया। शहर के लोग या पुलिस पकड़ कर फिर तुम्हें यहां वापिस भेज देंगे।"

"हां, यह सत्य है—तुम ठीक कहते हो।—" आईवन डिमिट्री ने अपना माथा रगड़ते हुए कहा— "यह असहनीय है! परन्तु मैं क्या कर सकता हूं? क्या .....?" उसके स्वर और उसके कम उम्र वाले बुद्धिमान चेहरे को देख कर ऐन्ड्री येफीमिच को प्रसन्नता हुई। वह उसको सान्त्वना दे कर उसे चुप करा देना चाहता था। वह उसकी चारपाई पर उसके पास बैठ गया और फिर क्षण भर तक सोचने के पश्चात कहा—"तुम पूछते हो कि तुम्हें क्या करना चाहिए। तुम्हारी स्थिति वाले व्यक्ति के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग यहां से भाग जाना होगा। परन्तु दुर्भाग्य से वह भी बेकार है। तुम को फिर पकड़ लिया जायेगा। जब कि समाज ने डाकुओं, पागलों और इस प्रकार के दूसरे लोगों से अपना बचाव करने का निश्चय कर लिया है तब तुम इस में भी सफल नहीं हो सकते। तुम्हारे लिए केवल एक ही रास्ता है कि तुम यह सोच कर अपने आप को आश्वासन दो कि तुम्हारा यहां रहना आवश्यक है।"

"यहां रहना किसी के लिए भी आवश्यक नहीं है।"

"एक बार जेलखाने और पागलखाने बन चुके हैं तो फिर न कोई अवश्य उनको बसायेगा। यदि तुम यहां न रहोगे तो मुझे रहना पड़ेगा,

मैं नहीं होऊंगा तो कोई और होगा। परन्तु प्रतीक्षा करो, आने वाले भविष्य में न जेलखाने होंगे न पागलखाने, न लोहे की कड़ियों वाली खिड़कियां और न ये तुम्हारे गाउन —ऐसा समय अभी नहीं तो थोड़ी देर बाद आयेगा।"

आईवन डिमिट्री घृणा से मुस्कुराया।

"तुम मेरी बातों पर हंस रहे हो" उसने कहा—"तुम्हारे और तुम्हारे सहकारी नास्तिकता जैसे लोगों का आने वाले भविष्य से कोई सम्बन्ध नहीं होगा। परन्तु तुम याद रक्खो कि तुम्हारा भविष्य हम लोगों के लिए है। क्या हुआ यदि मैं अपने आपको ठीक तरह से समझा नहीं सकता—मुझ पर हंसो! परन्तु एक नई जिंदगी का सूर्य अवश्य चमकेगा और सत्य की विजय होगी—और वह नया दिन हमारा होगा। मैं उसे नहीं देख सकूंगा परन्तु हमारी आने वाली सन्तानें उसे देखेंगी। —मैं अपने हृदय से उन आने वालों को बधाई देता हूं और खुश होता हूं—उनके लिये खुशी से उछलता हूं। आगे बढो! मेरे दोस्तो, परमात्मा तुम्हारी सहायता करेगा।"

आईवन डिमिट्री की आँखें चमक उठीं। वह खड़ा होगया और सीधा खिड़कियों की ओर देखता हुआ दर्द भरे स्वर में बोला—

"और इन कड़ियों वाली खिड़कियों के लिए मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं। सत्य की विजय हो। मैं प्रसन्न होता हूँ।"

"मुझे तुम्हारे प्रसन्न होने का कोई कारण दिखाई नहीं देता।" ऐंड्री येफीमिच ने कहा। यद्यपि आईवन डिमिट्री के हाव भाव उसे नाटकों की भाँति दिखाई दे रहे थे परन्तु फिर भी वह प्रसन्न हो रहा था— "जेलखाने और पागलखाने फिर नहीं रहेंगे और जैसा कि तुम कहते हो, न्याय की विजय होगी। परंतु जिंदगी का सार कभी बदल नहीं सकता। प्रकृति के नियम भी वैसे के वैसे ही बने रहेंगे। आज की तरह लोग बीमार पड़ेंगे, बूढ़े होंगे

और फिर मर जायेंगे। तुम्हारी जिंदगी को प्रकाशमय बनाने वाला वह दिवस कितना ही उज्जवल क्यों न हो, परंतु अंत में तुम्हें एक कफन में लपेट कर बक्स में बन्द करके धरती में गाड़ दिया जायेगा।"

"परन्तु अमरता ?"

"यह सब बेवकूफों की बातें हैं।"

"तुम विश्वास नहीं करते परंतु मैं करता हूं। दास्तोवस्की या वालटेयर या किसी दूसरे लेखक ने कहा है कि यदि परमात्मा न होता तो लोगों ने एक गढ़ लिया होता। और मुझे पक्का विश्वास है कि यदि अमरता न होती तो कभी न कभी बुद्धिमान लोगों ने उसकी खोज कर ली होती।"

"तुम बातें तो अच्छी करते हो।" ऐंड्री येफोमिच ने प्रसन्नता से मुस्कुराते हुए कहा—"यह अच्छा ही है कि तुम विश्वास करते हो। तुम्हारे जैसा विश्वास रख कर तुम दीवार में चुनवा दिये जाने पर भी प्रसन्नता से रहते। क्या मैं पूछ सकता हूं कि तुम ने कहां शिक्षा पाई थी ?"

"मैं कालेज में था परन्तु डिग्री नहीं मिल सकी।"

"तुम एक विद्वाखान और दूसरों को समझने वाले व्यक्ति हो। तुम कैसे ही वातावरण और परिस्थितियों में शान्ति पा सकते हो। स्वतंत्र और पवित्र विचार जो जिंदगी की उन्नति करने में सहायक होते हैं और संसार के अहंकार से प्रति घृणा—ये दो ऐसे वरदान होते हैं जिनसे बढ़ कर कोई दूसरा नहीं है। और चाहे तुम्हें दर्जन भर खिड़कियों के पीछे भी बन्द कर दिया जाये परन्तु तुम उनका आनन्द उठाते रहोगे। डिओजीन एक टब में रहता था परंतु फिर भी वह संसार के सब राजाओं की अपेक्षा सुखी था।"

"तुम्हारा डिश्रोजीन बेवकूफ था।" आईवन डिमिट्री ने उदास स्वर में चिल्ला कर कहा—"तुम मुझे डिश्रोजीन और जिंदगी की फिलासफी क्या समझाते हो?" उसने क्रोध में कहा और वह उठ खड़ा हुआ—"मैं जिंदगी को प्यार करता हूँ, अपने शरीर और मन से इसे प्यार करता हूं। मुझे अपने पकड़े जाने के भय की बिमारी है, यह मुझे पीड़ा देने वाला निरंतर भय बना रहता है परन्तु फिर भी कुछ क्षण ऐसे आते हैं जब जिंदगी पाने की लालसा तीव्र हो उठती है, और उन क्षणो में मुझे अपने पागल हो जाने का भय आता है। मैं जिंदा रहना चाहता हूँ—उसकी लालसा!"

वह पीड़ित होकर वार्ड में इधर उधर घूमने लगा। और फिर धीमे स्वर में बोला—"जब मैं सोचता हूं तो नाना प्रकार के स्वप्न मुझे दिखाई देते हैं। मुझे लोग अपने पास आते जान पड़ते हैं, मुझे आवाजें और संगीत सुनाई देता है, मुझे ऐसा प्रतीत होता है मानों मैं जंगलों में से गुज़र रहा हूं, समुद्र के किनारों पर घूम रहा हूं। और जिंदगी की चिन्ताओं और अहंकारों के लिए तड़प उठता हूँ—मुझे बताओ—क्या समाचार हैं?"

"तुम शहर के विषय में जानना चाहते हो या आम खबरें?"

"पहले मुझे शहर के विषय में बतलाओ फिर आम समाचार बतलाना।"

"समाचार कोई खास नहीं हैं, शहर उतना नीरस है कि तबियत घबड़ा उठती है। कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं जिससे बातें की जायें या जो हमारी बातें सुनें। कोई नये आदमी नहीं हैं, परन्तु अभी हाल में ही खोबोफ़ नाम का एक नया जवान डाक्टर आया है।"

"वह यहां आया था, बिल्कुल मूर्ख है—"

"हां, वह एक अशिक्षित युवक है। बड़ा अजीब बात हो रही है, तुम हो? यदि तुम संसार की दशा देखो तो उसके अनुसार रूस में बौद्धिक

प्रगति रुकी नहीं है, दूसरे शब्दों में अब भी सच्चे मनुष्य यहां हैं। परन्तु किसी न किसी कारण से इस प्रकार के व्यक्तियों को ही यहां भेजा जाता है। यह शहर बहुत भाग्यहीन है।"

"एक भाग्यहीन शहर" आईवन डिमिट्री ने ठंडी सांस भर कर कहा—" और आम समाचार क्या हैं? समाचारपत्रों और आलोचना की पत्रिकाओं में क्या छपता है?"

वार्ड में अंधेरा हो चुका था। डाक्टर उठा और अपने उसने रोगी को बतलाया कि आज कल रूस और रूस के बाहिर की दुनिया के क्या हालचाल हैं। आईवन डिमिट्री ध्यान से सुनता रहा और बीच बीच में प्रश्न भी पूछता जाता था। परन्तु यकायक—मानो उसे कोई भयानक बात याद आ गई हो—उसने अपना सिर पकड़ लिया और अपने आप को बिस्तरे पर फैंक दिया और अपनी पीठ डाक्टर की ओर फेर ली।

"क्या बात है?" ऐंड्री येफीमिच ने पूछा।

"अब तुम मुझ से एक शब्द भी नहीं सुन सकते।" आईवन डिमिट्री ने बड़ी रुखाई के साथ कहा—"चले जाओ।

"क्यों?"

"मैं कहता हूं चले जाओ! पाताल में चले जाओ।"

ऐंड्री येफीमिच ने अपने कंधे हिलाये, एक ठंडी सांस ली और वार्ड के बाहिर चला गया। हाल में से गुज़रते हुए उसने कहा

"नीकिता यदि तुम यहां का थोड़ा सा कूड़ा करकट साफ़ करवादो—इसकी दुर्गन्धि बहुत भयानक है।"

"अच्छी बात है हुजूर।"

"कैसा प्रसन्न मुख नवयुक है। ऐंड्री येफोमिच ने घर लौटते हुए रास्ते में सोचा—"जब से मैं इस शहर में आया हूँ तब से आज यह पहला व्यक्ति मिला है जिसके साथ बातचीत की जा सकती है। वह तर्क वितर्क कर सकता है और केवल उन्हीं मामलों में दिलचस्पी लेता है जिन्हें वह आवश्यक समझता है।"

जब अपने पढ़ने वाले कमरे में पढ़ रहा था, और जब अपनी चारपाई पर सोने गया तब सारे समय वह आईवन डिमिट्री के विषय में ही सोचता रहा। जब अगले दिन वह उठा तब भी उसे याद आया कि उसने एक चतुर और दिलचस्प व्यक्ति का परिचय प्राप्त किया है। और उसने निश्चय किया कि अवसर आते ही वह फिर उससे भेंट करेगा।

बात चीत

आईवन डिमिट्री उसी प्रकार अपनी चारपाई पर लेटा हुआ था जिस प्रकार वह कल डाक्टर से बातचीत करते करते अचानक लेट गया था। वह अपना सिर अपने दोनों हाथों में पकड़े हुए था और उसकी दोनों टांगें एक दूसरे पर रक्खी हुई थीं।

"नमस्कार, मेरे दोस्त।" ऐंड्री येफीमिच ने कहा—तुम सो तो नहीं रहे?"

"पहले तो मैं तुम्हारा मित्र ही नहीं हूँ।" आईवन डिमिट्री ने उसी प्रकार अपना मुख तकिये में छिपाये हुए कहा—"तुम अपने आप को व्यर्थ में परेशान कर रहे हो। तुम मुझ से कोई बात नहीं जान सकते।"

"बड़ी अजीब बात है।" ऐंड्री येफिमिच ने कहा—कल हम दोस्तों की भाँति बातें कर रहे थे परन्तु यकायक तुम नाराज़ हो गये और बीच में ही रूक गये। शायद मैं भद्दे ढंग से बातें कर रहा था या तुम से बिल्कुल निज विचार प्रकट कर रहा था।"

"तुम मुझे फांस नहीं सकते।" आईवन डिमिट्री ने चारपाई से उठते हुए कहा और डाक्टर की ओर ताने और सन्देह भरी दृष्टि से देखा। "तुम कहीं और जाकर यह जिरह और जासूसी करना। यहां तुम्हारे योग्य कोई काम नहीं मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम कल यहां क्यों आये थे?"

"तुम्हारे बड़े अजीब विचार हैं। डाक्टर ने हंस कर कहा"—लेकिन तुम यह क्यों सोचते हो कि मैं जासूसी कर रहा हूँ।"

"मैं सोचता हूँ—जासूस हो या डाक्टर, मेरे लिए कोई अन्तर नहीं है।

"हां—लेकिन—क्षमा करो.....डाक्टर चारपाई के पास एक स्टूल पर बैठ गया और अपना सिर हिलाया—" मान लिया कि तुम्हारा अनुमान सत्य ही है, मैं तुम से दगा करके तुम्हारी बातें पुलिस को बतला दूं तब क्या होगा ? वे तुम्हें गिरफ्तार कर लेंगे और तुम पर मुकदमा चलायेंगे। परन्तु फिर कचहरी या जेल में तुम्हारी दशा यहां से गिरी हुई होगी ? काले पानी या जेल में तुम्हें यहां से अधीक कष्ट नहीं भोगने पड़ेंगे। तब तुम्हें किस का भय है।

ऊपर के इन शब्दों ने आईवन डिमिट्री को प्रभावित किया। वह चुपचाप बैठ गया। पांच बजे का समय था इस समय प्रायः ऐंड्री येफीमिच अपने कमरे में चहलकदमी किया करता था और दुष्का उससे पूछा करती थी कि क्या उसके बीयर पीने का समय हो गया ? मौसम बहुत साफ और शांत था।

"खाना खाने के बाद मैं सैर करने के लिए निकला और देखो अब मैं कहा आगया हूँ।" डाक्टर ने कहा—"अब बसन्त पूरे यौवन पर है।"

"यह कौन सा महीना है ?" आईवन डिमिट्री ने पूछा—मार्च ?"

"हां, मार्च का अन्त हो रहा है।"

क्या बाहिर बहुत धूल उड़ा करती है ?"

"अधिक नहीं। बाग के रास्ते बिल्कुल साफ पड़े हैं।"

"शहर से बाहिर कहीं दूर की सैर करने में कितना आनन्द आता होगा आईवन डिमिट्री ने अपनी लाल आंखों को मलते हुए कहा मानों उनमें नींद भरी पड़ी हो—और फिर किसी गरम पढ़ने वाले कमरे में लौट कर किसी

अच्छे डाक्टर से अपने सिर दर्द का इलाज करवाना। पिछले कितने ही वर्षों में मैं एक इन्सान की जिंदगी नहीं बिता रहा हूँ। यहां की चीजों से मुझे घृणा हो गई है—वे मेरे लिए असहय बन गई हैं—मैं उन से ऊब चुका हूँ।" कल शाम की मुलाकात से वह थक गया था और कमजोरी का भी अनुभव कर रहा था। अतः वह इच्छा न होते हुए भी डाक्टर से बातें कर रहा था। वह अपनी उंगलियों को झटक रहा था और उसके मुख से यह स्पष्ट रूप से झलक रहा था कि उसका सिर बुरी तरह से घूम रहा है।

"एक गरम और प्रसन्न करने वाले पढ़ने के कमरे और इस वार्ड में कोई अन्तर नहीं है।" ऐंड्री येफीमिच ने कहा—"आदमी का सुख औ शाँति बाहिर नहीं बल्कि उसके अन्दर होते हैं।"

"तुम्हारा क्या मतलब है?"

"साधारण लोग अच्छाइयों और बुराइयों को बाहिर देखते हैं, मेरा मतलब यह कि गाड़ियों और आनन्द देने वाले कमरों में उसकी तलाश करते हैं, परन्तु विचारवान व्यक्ति उन्हें अपने ही अन्दर देखता है।"

"अपनी यह फिलासफी ग्राम में जाकर फैलाओ जहां गरमी पड़ती है और संतरों की सुगन्धि आती है यह यहां की जलवायु के उपयुक नहीं है मैं ने डिओजीन की बात किससे कही थी? तुमसे ही शायद—?"

"हां, कल मुझसे ही तो बातें कर रहे थे।"

"डिओजीन को पढ़ने के कमरे और गरम मकान की जरूरत नहीं थी वह उसके बिना ही सुखी रहता था—एक टब में लेटा रहता था और संतरे और अंजीरें खाया करता था। उसे रूस में ले आओ, दिसम्बर में न सही मई के महीने में ही उसे यहां रक्खो। वह मई में भी सर्दी से अकड़ जायेगा।

"नहीं दूसरी चीजों की तरह सर्दी को भी अबहेलना की जा सकती है। जैसा कि मारकस ओरेलस ने कहा था कि वेदना ही वेदना की जीवित धारणा (conception) है। इस धारणा को बदल देने की दिल में कोशिश करो, शिकायत करना बन्द कर दो और यह वेदना समाप्त हो जायेगी। बुद्धिमान, दूरदर्शी और विचारवान लोगों की पहचान दुःख के प्रति घृणा दिखाने में हो जाती है वह सदा संतुष्ट रहता है और किसी से भी आश्चर्य चकित नहीं होता।

"इसका मतलब यह हुआ कि मैं एक बेवकूफ हूँ क्योंकि मैं दुःखी होता हूँ, मैं असंतुष्ट हूँ और दूसरे लोगों की नीचता और कृतघ्नता पर आश्चर्य चकित होता हूँ।"

"तुम्हारा असंतोष व्यर्थ का है। जरा और सोचो, फिर तुम अनुभव करोगे कि जिन चीजों से तुम इतने चिन्तित हो जाते हो वे कितनी छोटी छोटी और महत्वहीन हैं।...जिंदगी को समझने की कोशिश करो उसी में सच्चा निर्वाण मिलता है।'

"समझा!" आईवन डिमिट्री ने क्रोध से कहा—"बाहर का, अन्दर का...मुझे क्षमा करो, लेकिन मैं तुम्हें नहीं समझ सकता। मैं तो सिर्फ एक बात जानता हूँ।" उसने खड़े होकर डाक्टर की ओर क्रोध से देखते हुए कहा मैं तो इतना जानता हूँ कि परमात्मा ने गरम खून और नसों से मुझे बनाया है, हां! और इन्द्रियों से बना हुआ यह शरीर यदि प्राण रखता है तो दुःख और पीड़ा पड़ने पर वह अवश्य उन्हें प्रकट करेगा। और मैं भी वही करता हूँ। दुःख का जवाब मैं आंसुओं और चीत्कारों में, कृतघ्नता का क्रोध में और नीचता का अपनी पराजय में देता हूँ। मेरी बुद्धि के अनुसार वही ठीक है और उसी को जिंदगी कहते हैं। जितना निर्बल उसके शरीर का ढांचा होता है उतनी ही कम प्रतिक्रिया उस पर होती है और उसका प्रत्युत्तर वह बहुत धीमे स्वर में देता है। और जितना ऊंचा उसका ढांचा

होता है उतने ही ज़ोर से वह उनका उत्तर देता है। यह कैसी बात है कि तुम इस विषय में कुछ नहीं जानते ? एक डाक्टर और फिर भी यह सत्य तुम्हें मालूम नहीं है। यदि तुम दुःख से घृणा करोगे, सदा संतुष्ट रहोगे, और किसी पर आश्चर्य प्रकट कहीं करोगे, तब तुम्हें अपने आप को उस दर्जे तक गिरा देना पड़ेगा।".....आईवन डिमिट्री ने मोटे, मुलायम शरीर वाले किसान की ओर संकेत करके कहा—"या अपने आप को दुःख सहने का इतना अभ्यस्त बना लो जब कि तुम पर प्रतिक्रिया ही न हो। दूसरे शब्दों में जीवित रहना छोड़ दो। मुझे क्षमा करना परन्तु मै न तो एक बुद्धिमान आदमी हूं और न ही एक फिलासफर।" आईवन डिमिट्री ने खीझ कर यो कहा और मैं यह सब नहीं समझता। मैं उस स्थिति में नहीं कि तर्क कर सकूं।

"परन्तु तुम तो बड़ी चतराई से तर्क कर रहे हो।"

"जिन वैरागियो की तुम हंसी उड़ाते हो वे बहुत पहुँचे हुए लोग थे परन्तु उनके उपदेश दो हज़ार वर्ष पहले ही इस संसार से विदा ले चुके थे और तब से लेकर यह धर्म आगे नहीं बढ़ा एक ईंच भी आगे नहीं बढ़ सकता क्योंकि यह व्यवहारिक या जीवित धर्म नहीं है। यह सफलता केवल उन चुने गिने लोगों में ही मिली जिन्होंने अपनी जिंदगी अध्ययन करने में या दूसरे धर्मों के झगड़ों में बिता दी थी, अधिक संख्या में लोग उसको समझ ही नहीं सके।—एक ऐसा धर्म जो धन और ऐश्वर्य के प्रति उदासीनता, जिंदगी के ऐशो आराम के प्रति उदासीनता और दुःख की उपेक्षा करना सिखलाता है—वह धर्म कभी आम लोगों तक पहुँच ही नहीं सकता जिन्होंने कभी धन या जिंदगी के ऐशो आराम को नहीं जाना और जिन के लिए दुःख की उपेक्षा का मतलब अपनी जिंदगी को उपेक्षा है, जिन्होंने अपनी जिंदगी में भूख, सर्दी, हानियां, बेइज्ज़ती और जिंदगी का भय ही पाया है। उनकी सारी जिंदगी इन्हीं भावनाओं से ओत प्रोत है जिंदगी से घृणा वे कर

सकते हैं उस से ऊब सकते हैं परन्तु उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते। हां मैं फिर दोहराता हूं कि वैरागियों के उपदेशों का कोई भविष्य नहीं है। आदि काल से लेकर वेदना सह कर उसका अनुभव करना और खीझ कर उसका उत्तर देना जिंदगी का आवश्यक अंग रहा है।

आईवन डिमिट्री अचानक अपने विचारों का तारतम्य तोड़ बैठा, वह चुप हो गया और खीझ कर अपना माथा रगड़ने लगा।

"मुझे तुम से कोई जरूरी बात कहनी थी लेकिन न जाने मेरे दिमाग से कहां निकल गई।" उसने कहा—"मैं क्या कह रहा था? हां, याद आगया एक वैरागी ने अपने मित्र को ऋण से मुक्त करने के लिए अपने आप को बेच दिया। इसका मतलब यही हुआ कि एक वैरागी पर भी दूसरे के सन्ताप की प्रतिक्रिया हुई क्योंकि अपने मित्र के लिए अपने आप को मिटा देने के समान उदार कर्म करने के लिए एक भावुकता, सहानुभूति से भरे हृदय की आवश्कता है। मैं ने जो कुछ सीखा था वह इस जेल में आकर भूल गया हूं नहीं तो मैं तुम्हें और उदाहरण देता। परन्तु ईसामसीह को लो। वह रोकर, मुस्कुरा कर, शोक करके, क्रोधित होकर और यहां तक कि उकता कर वास्तविकता के विरुद्ध विद्रोह करता था। मुस्कुरा कर विपत्ति का आलिंगन करने के लिए वह आगे नहीं बढ़ा और न ही उसने मृत्यु से घृणा की परन्तु गेथसेमें के बाग में बैठा प्रार्थना करता रहा कि यह प्याला उसके पास से गुजरे।"

आईवन डिमिट्री हंसा और बैठ गया।

"क्षण भर के लिए यह मान लो कि संतोष और शांति मनुष्य के बाहिर नहीं बल्कि भीतर हैं। उसने कहा—"मान लो कि हमें दुख की उपेक्षा करनी चाहिए और किसी पर आश्चर्य प्रकट नहीं करना चाहिए। परन्तु तुम यह

नहीं बतलाते कि किस बुनियाद पर तुम यह सिद्धान्त बनाते हो। तुम एक बुद्धिमान व्यक्ति हो, एक फिलासफर हो।"

"मैं फिलासफर नहीं हूँ परन्तु प्रत्येक व्यक्ति इसी प्रकार के धर्म का उपदेश देगा क्योंकि यही तर्कयुक्त और न्यायसंगत है।"

"परन्तु मैं यह पूछना चाहता हूँ कि जिंदगी को समझने में दुःख की उपेक्षा में, और दूसरी बातों को समझने की क्या तुम में योग्यता है? क्या तुम ने कभी दुःख और विपत्तियों का सामना किया है? दुःख की तुम्हारी क्या धारणा है? जब तुम बच्चे थे तो क्या पिटा करते थे?"

"नहीं मेरे माता पिता शारीरिक पीड़ा देने के विरुद्ध थे।"

"परन्तु मेरे पिता बड़ी निर्दयता से मुझे पीटा करते थे। वह तो शरीर से खून तक निकालने में नहीं हिचकते थे। उनकी लंबी नाक और पीली गर्दन थी। परन्तु तुम्हारे विषय में.........सारी जिंदगी भर किसी ने तुम पर हाथ तक नहीं लगाया, और तुम ऐसे मोटे ताजे हो जैसा कि एक बैल होता है। तुम अपने पिता की छत्र छाया में पल कर बड़े हुए, उसके खर्चे पर तुमने शिक्षा पाई और फिर ऐसी हराम की ऊंची नौकरी पर आ गिरे जहां काम नहीं करना पड़ता। बीस साल से अधिक समय से तुम मुफ्त के मकान में रहते हो, मुफ्त की आग, रोशनी और नौकर मिले हुए हैं। और जितना मन में आवे उतना अपनी इच्छा के अनुसार काम करो या बिल्कुल न करो। स्वभाव से ही तुम कमजोर और आलसी प्रकृति के आदमी रहे। मुसीबतों से दूर रहने के लिए ही तुमने इस प्रकार की जिंदगी अपनाई। तुमने अपना काम कम्पाउन्डरों और बदमाश लोगों पर छोड़ दिया और अपने घर में चुपचाप आराम से बैठे रहे, रुपया जोड़ते रहे और किताबें पढ़ते रहे और सब प्रकार

की उन्नत बेवकूफ बातों पर अपने विचार प्रकट करके खुश होते रहे। और और—"आईवन डिमिट्री ने डाक्टर की नाक की ओर देखा।

बीयर पीते रहे। संक्षेप में तुमने जिंदगी नहीं देखी और तुम उसके विषय में कुछ नहीं जानते। वास्तविता का तुम्हें कृत्रम और ऊपरी ज्ञान है। दुःख की उपेक्षा और किसी भी घटना पर आश्चर्य चकित न होने के तुम्हारे पास अच्छे कारण हैं। इस संसार की निःस्सारता के सिद्धान्त बाहर और भीतर की प्रसन्नता के प्रति घृणा, दुःख और मृत्यु के प्रति उदासीनता आदि आदि—यह सारी फिलासफी आलसी और आराम पसंद रूसी व्यक्ति के लिए है। उदाहरण के लिए तुम एक किसान को अपनी स्त्री को पीटते देखते हो। तुम क्यों बाधा दो। उसे मारने दो। वह सब बराबर है क्योंकि आज नहीं तो कल दोनों ही मर जायेंगे अतः अपनी स्त्री को पीट कर वह अपने ऊपर ही प्रहार करता है अपनी स्त्री पर नहीं। शराब पीना गलत और बेवकूफी है परन्तु जो आदमी पीता है वह मर जाता है और जो स्त्री शराब पीती है वह भी मर जाती है। एक स्त्री तुम्हारे पास दाँत का दर्द लेकर आती है लेकिन उससे क्या हुआ दर्द ही दर्द की धारणा है और बिमारी के बिना तुम जीवित नहीं रह सकते। सब को मरना पड़ेगा और इस लिए भली औरत मेरे विचारों और मेरी शराब में बाधा न डाल। एक नवयुवक तुम्हारे पास सलाह मांगने आता है उसे क्या करना चाहिए उसे किस प्रकार जिंदा रहना चाहिए उसका उत्तर देने से पूर्व बहुत से लोग सोचेंगे परन्तु तुम्हारे पास बना बनाया जबाब तैयार रहता है जिंदगी को समझने और और उसके उद्देश्य को भली प्रकार समझने के लिए संघर्ष करो। और यह कौनसा काल्पनिक उद्देश्य है। इसका कोई जवाब नहीं। हम लोहे की कड़ियों के भीतर कैद हैं हमें यंत्रणा दी जाती है और हम यहां सड़ रहे हैं परन्तु वास्तव में यह युक्तिसंगत और सुन्दर है क्योंकि इस वार्ड में और एक आराम

देने वाले पढ़ने के कमरे में कोई बड़ा अन्तर नहीं है। यह बड़ी आराम की सीधी सादी फिलासफी है। तुम्हारी आत्मा पवित्र है और तुम अपने आप को एक बुद्धिमान व्यक्ति समझते हो। नहीं महाशय यह फिलासफी नहीं है और न ही ये सुलझे हुए विचार है। यह आलस्य है, नींद है।—हां—"आईवन डिमिट्री ने अपने शब्दों को दोहराते हुए कहा—"तुम दुःख की उपेक्षा करते हो, जरा अपनी उंगली दरवाजे में दबाओ, फिर तुम पूरी आवाज से भूकने लगोगे।"

"और यदि मैं न चिल्लाऊं—"ऐंड्री येफीमिच ने उत्सुकता से मुस्कुराते हुए कहा।

"क्या यदि तुम्हें लकुवा मार जाये, यदि कोई निर्लज्ज व्यक्ति अपने सांसारिक पद का लाभ उठा कर लोगों के सामने तुम्हारा अपमान कर दे तब तुम्हें पता चलेगा कि दूसरों से जिंदगी को समझने और वास्तविक उद्देश्य के लिए संघर्ष करनेके लिए कहने का क्या मतलब होता है।

"यह तुम्हारी कल्पना है।" ऐंड्री येफीमिच ने संतुष्ट होकर अपने हाथ मलते हुए कहा—"दूसरों के विषय में अनुमान लगाने से तुम्हें जो प्रेम है, उससे मुझे बडी प्रसन्नता हुई और तुमने अभी जो चरित्र खींचा है वह सचमुच ही प्रशंसनीय है। मुझे यह मानना पड़ेगा कि तुमसे बातें करके मुझे बड़ी प्रसन्नता मिलती है। परन्तु जैसे तुम्हारी बातें सुनी वैसे ही तुम मेरी बात सुनो।"

चारपाई पर

यह बात चीत लगभग एक घंटे तक होती रही और ऐंड्री येफीमिच ऊपर से इस से बहुत प्रभावित हुआ। वह वार्ड में प्रत्येक दिन आने लगा। वह प्रातःकाल वार्ड में जाता, खाने के पश्चात फिर चल देता और प्रायः अंधेरा होने तक वह आईवन डिमिट्री के साथ बातचीत करता हुआ पाया जाता। पहले पहल आईवन डिमिट्री उसके साथ खुल कर अपने विचारों को प्रकट नहीं करता था। उसके किसी और बुरे उद्देश्य पर सन्देह करता था और वह उसके सामने ही अपनी शंकाओं को बतला देता था। परन्तु अन्त में वह उससे बातें करने का अभ्यस्त हो गया और उसका रूखा और अशिष्ट वर्ताव मीठे स्वर के तानों में बदल गया था।

शीघ्र ही हस्पताल में यह अफवाह फैल गई कि डाक्टर ऐंड्री येफीमिच प्रतिदिन वार्ड नम्बर छः के चक्कर लगाने लगा है। कंपाउडर नीक्ता और नर्सों में से कोई भी उसका कारण नहीं जान सका। वह क्यों घंटों पर घंटे वार्ड में बिताता है वह क्या बातें किया करता है या वह नुस्खे क्यों नहीं लिखता उसका व्यवहार हर एक व्यक्ति को बड़ा विचित्र सा लगता था। मिखेल। एव्रीरिचं कभी कभी उसे घर में नहीं पाता था और द्रुष्का भी आश्चर्य चकित हो जाती थी क्योंकि डाक्टर अपने निश्चित समय पर बीयर नहीं पीता था और कभी कभी खाने को भी उसे देर हो जाती थी।

एक दिन जून के अन्त में डाक्टर खोबोफ हस्पताल के किसी काम से ऐंड्री येफीमिच के घर गया। घर में न पाकर वह उसे हाते में देखने लगा जहां उसे पता चला कि बुड्ढा डाक्टर पागलखाने में देखने में गया हुआ है। खोबोफ वार्ड के हाल में घुसा जहां खड़े खड़े उसने अन्दर की निम्नलिखित बातचीत सुनी।

"हम कभी एक दूसरे के विचारों से सहमत नहीं हो सकते और तुम कभी मुझे अपनी धारणाओं पर विश्वास नहीं करा सकते।" आईवन डिमिट्री ने खीझ कर कहा—"तुम्हें वास्तविकता का बिल्कुल पता नहीं है। तुमने कभी दुःख नहीं उठाया, केवल एक जोंक की भांति दूसरों का खून चूसते रहे परन्तु मैं अपने जन्म से लेकर आजतक निरंतर दुःख उठाता आया हूँ। इस लिए मैं साफ साफ तुमसे कहता हूं कि मैं अपने आप को तुमसे अधिक ऊंचा समझता हूं और सब बातों में अपने को तुमसे अधिक योग्य पाता हूँ तुम्हें मुझे शिक्षा देने की कोई आवश्यकता नहीं।

"अपनी धारणाओं के अनुसार तुम्हें बदलने की मेरी कोई इच्छा नही है।" ऐंड्री मेफीमिच ने नम्रता से कहा और ऊपर से उसने शोक प्रकट किया कि वह उसको गलत समझा। "मेरे दोस्त प्रश्न यह नहीं है। दुःख और सुख बहुत अस्थापी हैं उनको परमात्मा पर छोड़ दो? हमारी बहस का निचोड़ तो यह है कि तुम और मैं एक दूसरे में विचारवान व्यक्तियों को देखते हैं और इस में हम दोनों एक दूसरे के निकट आ जाते हैं चाहे हमारे विचारों में कितनी ही भिन्नता क्यों न हो। मेरे दोस्त यदि तुम जानते कि अपने चारों ओर बेवकूफ लोगों के साथ से मैं कितना ऊब गया हूँ। बुद्धि का अभाव और नीरसता से भरे हुए दिमागों से मैं कितना थक गया हूँ—यदि तुम जानते कि तुमसे बातें करते समय मुझे कितनी प्रसन्नता मिलती है। तुम एक चतुर आदमी हो और तुम्हारे सहयोग में मुझे बड़ा आनन्द मिलता है।

खोबोफ ने दरवाजा खोला और कमरे के अन्दर झांका। आईवन डिमिट्री अपनी रात की टोपी पहने और डाक्टर येफीमिच चारपाई पर पास पास बैठे थे। पागल कांप उठा वह अजीब अजीब से चेहरे बनाने लगा और अपनी गाऊन को खैंचने लगा। डाक्टर अपना सिर झुकाये बिना हिले डुले बैठा रहा। उसका चेहरा लाल हो गया और वह असहाय और उदास अनुभव करने लगा

खोबोफ ने अपने कंधे हिलाये हंसा और नीक्ता की ओर देखा। नीक्ता ने भी अपने कंधे हिलाये।

अगले दिन फिर खोबोफ़ कम्पाउंडर को साथ लेकर वार्ड में आया। वे बड़े हाल में खड़े बातचीत सुनते रहे।

"ऐसा मालूम होता है कि इस कुत्ते का दिमाग़ फिर गया है।" खोबोफ ने वार्ड से बाहर जाते हुए कहा।

"भगवान हम पापियों पर दया रखें।" शान दिखाने वाले सर्जे सर्जिय ने एक आह भरते हुए कहा, वह चक्कर लगा कर बाहिर लौट रहा था जिससे उसके चमकते हुए जूते ख़ून में न भर जायें। "मैं इतना स्वीकार करता हूं कि मैंने बहुत पहले ही इसकी संभावना की थी।"

रहस्य

इस घटना के पश्चात ऐंड्री येफीमिच अनुभव करने लगा कि उसके चारों ओर एक अजीब सा रहस्यमय वातावरण फैला हुआ है। नौकर चाकर, नर्सें और रोगी, वह जिससे मिलता, वे प्रश्नसूचक दृष्टि से एक दूसरे की ओर देखने लगते थे और परस्पर कानाफूसी करने लगते थे। जब वह हस्पताल के बाग में सुपरिंटेंडेंट की छोटी सी लड़की माशा को देखता तो पहले की भाँति मुस्करा कर उसके पास चला जाता जिससे वह उसके बाल सहला सके, परन्तु वह कोई कारण बतलाये बिना भाग जाती थी। जब पोस्टमास्टर मिखेल एवीरिच उसकी बातें सुनने के लिये बैठता तो वह अब पहले की भाँति "बिल्कुल ठीक है" नहीं करता था वरण उसका चेहरा लाल हो जाता था और वह हकला कर कहने लगता था—"हां.. हां...हां..." और कभी कभी अपने मित्र की ओर बड़े ध्यान से और शोकमयी मुद्रा में देख कर डाक्टर को राय देता कि वह शराब और बीयर पीना छोड़ दे। परन्तु ऐसा करते समय वह एक सभ्य व्यक्ति की भाँति खुल कर नहीं बोलता था और केवल घुमा फिरा कर अपना मतलब कहता था। कभी एक फौज के कमांडर की जो एक बड़ा भला आदमी था और कभी एक पादरी की जो एक उच्च कोटि का विचारवान व्यक्ति था, उनके बीमार होने की कहानियां सुनाया करता था, जो शराब छोड़ते ही भले चंगे हो गये। दो तीन बार उसका सहकारी खोबोफ भी उसके पास आया जिसने उसे शराब छोड़ देने के लिए कहा और बिना कोई कारण बतलाये ब्रोमाइड पोटेशियम खाने के लिए कहा।

अगस्त में उसे नगराध्यक्ष का एक पत्र मिला जिसमें उसे जरूरी काम के लिए बुलाया गया था। निश्चित समय पर टाउनहाल पहुच कर उसने नौकरी देने वाले विभाग के अध्यक्ष, जिला स्कूल के सुपरिंटेंडेंट, शहर की कौंसिल के

एक सदस्य, खोबोफ और एक स्वस्थ सफेद बालों वाला व्यक्ति—जिसको एक डाक्टर कह कर उसका परिचय कराया गया था—को अपनी प्रतीक्षा करते पाया। यह डाक्टर—जिसके पोलिश नाम का उच्चारण करना कठिन था, तीस मील की दूरी पर एक गाँव में रहता था और अपने घर जाते समय इस शहर से गुजर रहा था।

"तुम्हारे विभाग के विषय में एक समाचार मिला है।" शहर की कौंसिल के सदस्य ने ऐंड्री येफीमिच से कहा—"तुमने देखा, किदोरिच कहता है कि बड़ी ईमारत में औषधालय के लिए कोई स्थान नहीं है और इसकी किसी दूसरे हिस्से में बदली कर देनी चाहिए। यह तो आसान है और किसी भी दिन इस की बदली की जा सकती है परन्तु मुख्य बात तो यह है कि ईमारत की मरम्मत करने की आवश्यकता है।"

"हां, मरम्मत के बिना तो अब काम चलना कठिन है।" ऐंड्री येफीमिच ने क्षण भर तक सोचने के पश्चात कहा—"परन्तु यदि कोने के हिस्से में औषधालय बसाया गया तो तुम्हें कम से कम पांच सौ रूबल खर्च करने पड़ेंगे। और इस खर्चे का लाभ कुछ न होगा।"

कुछ मिनटों तक सब चुपचाप बैठे रहे।

"मैंने तो दस साल पहले ही आप लोगों से बिनती की थी।" ऐंड्री येफीमिच ने नम्रता से कहा "शहर की आमदनी देखते हुए वर्तमान दशा में यह हस्पताल ऐशो आराम की वस्तु है। सन चालीस में यह बनाया गया था जब कि इस का खर्चा सहने के साधन पर्याप्त थे। शहर अपना बहुत सा धन अनावश्यक इमारतों और बिना काम के दफतर खोलने में खर्च करता है। मेरे विचार में इतने धन से हम आधुनिक ढंग के दो हस्पताल तैयार कर सकते हैं लेकिन दृष्टिकोण दूसरा होना चाहिये।'

"तब हमें काम करने की वर्तमान विधि को बदल देना चाहिये।" कौंसिल के सदस्य ने कहा।

"मैंने तो पहले ही आप को राय दी थी कि इस डाक्टरी विभाग को सरकार के हवाले कर दिया जाये।"

"हां, और सरकार के हवाले वह धन भी कर दें जिसे वह एक दम हड़प ले।" सफेद बालों वाले डाक्टर ने हंस कर कहा।

"यही तो सरकार का काम करने का ढंग है।" शहर के कौंसिलर ने हंस कर कहा। ऐंड्री येफीमिच ने डर कर सफेद बालों वाले डाक्टर की ओर देखा और कहा हमें अपने फैसले न्याय के बल पर करने चाहिएं।

फिर सब चुप हो गये। चाय आई। नौकरी देने वाले विभाग के अफसर ने घबड़ा कर मेज़ के दूसरी ओर ऐंड्री येफीमिच के हाथ का स्पर्श किया और कहा "डाक्टर, तुम हमें बिल्कुल भूल गये मालूम देते हो। परन्तु तुम तो सदा ही एक पादरी की भांति रहे। तुम ताश नहीं खेलते और तुम्हें औरतों में दिलचस्पी नहीं। मुझे डर है कि हमारी बातचीत से तुम ऊब गये हो।"

इस बात पर सब एक मत थे कि कोई भी भला आदमी इस शहर में आकर उकताये बिना नहीं रह सकता। कहीं नाटक नहीं, संगीत के जलसे नहीं। और पिछली बार क्लब के नाच में बीस स्त्रियां थीं और केवल दो पुरुष थे। नवयुवकों को नाच में कोई दिलचस्पी नहीं है लेकिन वे खाने की मेज़ के चारों ओर घिरे रहते हैं या परस्पर ताश खेला करते हैं। और ऐंड्री येफीमिच धीमे और नम्र स्वर में बिना किसी की ओर देखे शोक प्रकट करने लगा कि नागरिक अपनी असीम शक्ति और बुद्धि और अपनी भावनाओं को किस प्रकार ताश तथा दूसरी बातों में अपव्यय करते हैं। उन्होंने उच्च स्वर

की बातचीत करने में या पुस्तकें पढ़ने में या ऐसा सुख प्राप्त करने की—जो केवल बुद्धि से ही प्राप्त हो सकते हैं—न तो कभी कोशिश की और न ही इनमें से किसी बात में अपना समय व्यतीत किया। बुद्धि ही संसार में सब से दिलचस्प और दूसरों से अलग एक वस्तु है। बाकी सब कुछ नीच और घृणित है। खोबोफ अपने साथी की बातचीत बड़े ध्यान से सुन रहा था, और फिर यकायक पूछ बैठा।

"ऐंड्री येफीमिच, आज महीने का कौन सा दिन है?"

इस प्रश्न का उत्तर पाकर उससे सफेद बालों वाले डाक्टर ने अपनी योग्यता के अनुसार कितने ही प्रश्न परीक्षकों की भाँति पूछे। सप्ताह का कौन सा दिन है, साल में कितने दिन होते हैं और क्या यह सत्य है कि वार्ड नम्बर छः में एक अद्भुत पहुंचा हुआ सिद्ध व्यक्ति है?

अन्तिम प्रश्न का उत्तर देते समय ऐंड्री येफीमिच का चेहरा लाल हो गया और कहा "हां, वह पागल है—परन्तु वह एक बहुत ही दिलचस्प नवयुवक है।

और कोई प्रश्न नहीं पूछा गया।

जब ऐंड्री येफीमिच अपना कोट पहन रहा था, नौकरी दिलाने वाले विभाग के अफसर ने अपना हाथ उसके कंधे पर रक्खा और एक ठंडी सांस भर कर कहा।

"हम जैसे बूढ़े लोगों के लिए अब आराम करने का समय आ गया है।"

टाउन हाल से निकल कर ऐंड्री येफीमिच ने अनुभव किया मानों वह अभी अभी एक ऐसी समिति के सामने से आ रहा हो जो उसके मस्तिष्क की परीक्षा करने के लिये नियुक्त की गई थी। उसे वे प्रश्न याद आये जो उससे पूछे गये थे, उसका चेहरा लाल हो गया और उसने जिंदगी में पहली बार डाक्टरी विज्ञान पर दया आई।

"हे भगवान !" उसने सोचा—"इन लोगों ने अभी अभी मानसिक विज्ञान का अध्ययन किया है और परीक्षा देकर लौटे हैं। उनकी यह अज्ञानता कहां से टपक पड़ी ? उन्हें मानसिक विज्ञान का कुछ भी पता नहीं है।"

जिंदगी में पहली बार उसने अपने अपमान का अनुभव किया और उसे क्रोध आने लगा।

शाम के समय मिखेल एवीरिच उससे मिलने आया। नमस्कार आदि बिना एक भी शब्द कहे पोस्टमास्टर उसके पास आया और उसके दोनों हाथ पकड़ लिये और दर्द भरी आवाज़ में कहा।

"मेरे प्यारे दोस्त, मेरे मित्र, मुझे यह परखना है कि तुम्हें मेरे सच्चे स्नेह पर विश्वास है या नहीं। अपना मित्र समझ कर मैं जो मांगता हूं वह मुझे दो।" और एंड्री येफीमिच के एक भी शब्द बोलने से पहले ही उसने दर्द भरे स्वर में कहा—"तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी सुसंस्कृति और तुम्हारे उच्चे विचारों के कारण तुम से स्नेह करता हूँ। एक भले आदमी की भाँति मेरी बातें सुनो। अपने वे नियमों में बंध कर डाक्टर तुमसे सच्ची बात छिपा रहे हैं परन्तु मैं एक सिपाही की भाँति तुम्हें सब कुछ साफ साफ बतला दूंगा। तुम ठीक नहीं हो ! मेरे पुराने मित्र मुझे माफ करना, परन्तु यह नग्न सत्य है और सब लोगों ने इसका अनुभव किया है। अभी अभी डाक्टर किदोरिच ने कहा कि तुम्हारे स्वास्थ्य लाभ के लिए तुम्हें आराम करना और अपना मन बहलाना आवश्यक है। यह बिल्कुल सत्य है और यह परिस्थितियों के सर्वथा अनुकूल है। थोड़े दिनों से मैं भी छुट्टी लेकर हवा बदलने के लिये बाहिर जाऊंगा। इस समय तुम यह साबित कर दो कि तुम मेरे मित्र हो और मेरे साथ चल पड़ो, आओगे न ?

"मैं बिल्कुल ठीक हूं।" एंड्री येफीमिच ने क्षण भर तक सोचने के बाद कहा—"और मैं नहीं जा सकता। तुम्हारे साथ अपनी मित्रता साबित करने का

कोई दूसरा मार्ग बतलाओ।"

बिना किसी कारण के, पुस्तकों और हुक्का के बिना और बिना बीयर के चले जाना—बीस वर्षों की पुरानी जिंदगी के कार्यक्रम को यकायक तोड़ देना जब पहले पहल उसने इस योजना के विषय में सोचा तब वह उसे अपना पागलपन और जंगलीपन मालूम पड़ा। परन्तु उसे टाउन हाल की बातचीत याद आई और वहां से घर लौटते समय उसने जिस मानसिक वेदना का अनुभव किया था, उसने उसके विषय में सोचा और कुछ दिनों के लिए उस शहर को छोड़ देने का विचार जहां लोग उसे पागल समझते थे—इससे उसे प्रसन्नता सी हुई।

"परन्तु तुम्हारा कहां जाने का विचार है?" उसने पूछा।

"मास्को, या पीटर्सबर्ग या वार्सा। वार्सा में मैंने अपनी जिंदगी के कुछ सुन्दर दिन बिताये थे। बड़ा ही आश्चर्य जनक शहर है।"

पागल कौन ?

इस बातचीत के एक सप्ताह पश्चात ऐंड्री येफीमिच को एक सूचना मिला जिसमें उसे आराम करने की सलाह दी गई थी—यानी वह अपने पद से इस्तीफा दे दे परन्तु उसने इस ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। उसके भी एक सप्ताह के बाद वह और मिखेल एविरिच गाड़ी में बैठ कर रेलवे स्टेशन की ओर जा रहे थे। मौसम ठंडा और साफ था और आकाश हल्के नीले रंग का था। जब वे डाकघरों पर ठहरते, और उन्हें चाय पीने के लिये गंदे गिलास दिये जाते या घोड़ों को बदलने में देर लगती, तब क्रोध से मिखेल एवीरिंच का चेहरा तमतमा उठता, उसका सारा शरीर कांप उठता, और वह चिल्ला कर कहता, चुप हो जाओ! बहस मत करो!.....और जब वे गाड़ी में बैठ जाते तो वह बिना थके पोलैंड और काकेशियस में अपनी यात्राओं का वर्णन करने लगता क्या क्या घटनाएं घटीं, किस किस खतरे का सामना करना पड़ा। वह तीव्र स्वर में बोलता था और प्रति क्षण इस प्रकार की आंखें बनाता था जिससे दूसरों को उसके झूठ बोलने का सन्देह होने लगता था—जब वह अपनी कहानियां कहा करता था तो बिल्कुल डाकटर के मुख के पास सांस लेता था और उसके कानों में हंसा करता था। इन सब बातों से डाकटर मन ही मन दुखित होता क्योंकि उसके सोचने और मन को एकाग्रचित्त करने में बाधा पड़ती थी।

कम खर्च होने के उद्देश्य से उन्होंने तीसरे दर्जे में यात्रा की जहां सिगरेट पीने तक की आज्ञा नहीं थी। यात्रियों में आधे साफ सुथरे थे। मिखेल एवीरिंच ने सब का परिचय प्राप्त कर लिया और जब वह एक सीट से दूसरी और फिर तीसरी पर जाता तो जोर से सब को सूचित करता जाता था कि इस प्रकार की सड़ी हुई रेलों में यात्रा करना बड़ी भारी गलती है। चारों ओर बेवकूफ लोग ही दिखाई देते हैं। घोड़े की पीठ पर यात्रा करने में कितना

अन्तर है, एक दिन में सौ वर्स्ट पार किया जा सकता है और यात्रा के बाद तुम वैसे के वैसे स्वस्थ और ताजे दिखाई देते हो, हाँ, पिंसकी की दलदलें सूख जाने से हमें अकाल का भय दिखाया जा रहा है। चारों ओर अव्यवस्था के अतिरिक्त और कुछ भी दिखाई नहीं देता। मिखेल एवीरिच क्रोधित हो उठता था, तीव्र स्वर में बोलने लगता था और किसी दूसरे व्यक्ति को एक शब्द भी नहीं कहने देता था। उसकी निरंतर बात चीत केवल उसके जोर जोर से हंसने और किसी बात को स्पष्ट करने के संकेतों से ही बीच में टूटती थी जिस से ऐंड्री येफीमिच ऊब गया।

"हम दोनों में से कौन अधिक पागल है?" उसने अपने आप से पूछा। "मैं, जो अपने दूसरे यात्रियों के काम में बाधा न डालने का पूर्ण प्रयास करता हूँ या यह मैं मैं, चिल्लाने वाला स्वार्थी जो अपने आप को सब से चतुर और अधिक दिलचस्प व्यक्ति समझता है और किसी को क्षण भर की भी शाँति नहीं लेने देता।"

मास्को में मिखेल एवीरिच ने फौजियों का छोटा कोट और लाल पाइपिंग लगी हुई पैंट पहिन ली। बाहर जाते समय वह सैनिकों की भांती टोपी और लंबा कोट पहन लेता था जिस से सैनिक उसे सलाम किया करते थे, ऐंड्री येफीमिच उसे ऐसा व्यक्ति समझने लगा था जिसने समाज के उच्च वर्ग की सारी अच्छाइयाँ तो छोड़ दी थीं परन्तु सब दोषों को अपने में रख लिया था। वह अपने चारों ओर लोगों को अपना आदर सम्मान करते हुए देखना चाहता था चाहे वह कितना ही अनावश्यक क्यों न हो। दियासलाई मेज़ पर उसके सामने रक्खी रहती और वह यद्यपि उसे देख भी लेता परन्तु फिर भी बेरा से चिल्ला कर कहता कि वह उसे दियासलाई पकड़वा दे। वह होटल की नौकरानी के सामने ही रात के कपड़ों में घूमता; वह होटलों की नौकरानियों को—चाहे वे उम्र में कितनी ही बड़ी क्यों न हों—बिना किसी भेद भाव के 'तू' कह कर

सम्बोधित करता और कभी कभी खीझ कर उन्हें बेवकूफ और नासमझ कहता। ऐंड्री योफीमिच उसके इस व्यवहार को भले लोगों का सा व्यवहार अवश्य समझता परन्तु उसको इन सब से घृणा थी।

सब से पहले मिखेल एवीरिच अपने मित्र को इवरस्का लाया। उसने बड़ी धार्मिक मुद्रा में प्रार्थना की, पृथ्वी तक झुका, आँसू बहाये और प्रार्थना समाप्त करके उसने एक ठंडी साँस ली और कहा—

"एक नास्तिक भी प्रार्थना करके शान्ति का अनुभव करता है। मूर्ति का चुम्बन करो मेरे मित्र।"

ऐंड्री योफीमिच का मुंह लाल हो गया और उसने उस मूर्ति का चुम्बन किया और मिखेल एवीरिच ने अपने होंठ पोंछे, और अपना सिर हिला कर धीमे स्वर में प्रार्थना करने लगा और एक बार फिर उसकी आँखों में आंसू भर आये। इसके पश्चात वे क्रेमालिन गये, जहाँ उन्होंने ज़ार की तोप और उसका घंटा देखा, उन्हें अपने हाथ से छुआ और मास्को नदी के पार दृश्य की प्रशंसा की। उन्हों ने कुछ समय संत्रीयर के मन्दिर में व्यतीत किया और उसके बाद अजायब घर गये।

उन्हों ने एक शानदार होटल में खाना खाया। मिखेल एवीरिच अपनी दाढ़ी के बाल सहलाता रहा, होटल के 'मीनू' पर काफी देर तक देखा और फिर रईस की भांति—जो होटल को भी घर के समान ही समझता हो—उसने बेरा को आवाज दी :

"हम देखेंगे कि हमें तुम आज किस तरह का खाना खिलाते हो।"

सब के सामने अपनी इज्जत

डाक्टर घूमता था, खाता पीता था, सब कुछ देखता था परन्तु उसके विचारों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वह मिखेल एवीरिच से घबड़ा गया था। वह अपने साथी से छुटकारा पाकर कुछ आराम करना चाहता था, उससे दूर भाग जाना चाहता था परन्तु पोस्टमास्टर अपना यह कर्त्तव्य समझता था कि उसे अपनी आँखों से ओझल न होने दे और चाहता था कि डाक्टर हर तरह के मनोरंजन का स्वाद चख ले। दो दिन तक तो ऐंड्री येफीमिच सब कुछ सहता रहा परन्तु तीसरे दिन उसने अपने मित्र को बतलाया कि उसका जी ठीक नहीं है अतः वह सारा दिन घर में ही रहेगा। मिखेल एवीरिच ने कहा कि तब वह भी घर पर ही रहेगा। उसे यह भी कहा कि अब आराम करना अतिआवश्यक है नहीं तो उनमें कोई शक्ति नहीं रह जायेगी। ऐंड्री येफीमिच अपना मुंह दीवार की ओर करके सोफा पर लेटा रहा और दाँत भींच कर अपने मित्र की बातें सुनता रहा जो उसे विश्वास दिला रहा था कि जल्दी या देर में, आखिर एक दिन फ्रांस जर्मनी का सत्यानाश कर देगा, मास्को में बहुत से बदमाश भरे पड़े हैं और घोड़े को देख कर ही उसके गुणों का पता नहीं लगाया जा सकता। डाक्टर का हृदय उछलने लगा, उसके कानों में अपने मित्र का स्वर मक्खियों की भाँति भिनभिना रहा था परन्तु शिष्टाचार के नाते वह अपने मित्र से यह नहीं कह सका कि वह उसे अकेला छोड़दे या स्वयं चुप हो जाये। परन्तु सौभाग्य से मिखेल एवीरिच कमरे में बैठा थक गया और खाना खाने के पश्चात सैर करने के लिए बाहिर चला गया। अकेला रह जाने पर ऐंड्री येफीमिच पूर्ण रूप से आराम करने लगा। चुपचाप सोफा पर अकेले लेटे रह कर यह सोचता कि वह कमरे में अकेला ही है—इस में कितना सुख मिलता है। एकान्त के बिना सच्ची

प्रसन्नता पाना असंभव है। आकाश से गिरा हुआ देवदूत शायद भगवान् के प्रति इस कारण से ईमानदार नहीं रहा क्योंकि वह एकान्त चाहता था जो देवदूतों के लिए असम्भव था। ऐंड्री येफीमिच इन वस्तुओं के विषय में सोचना चाहता था जिनको पिछले दिनों उसने देखा है और जिनके विषय में सुना है। परन्तु वह मिखेल एवीरिच को अपने मस्तिष्क से दूर नहीं कर सका। "परन्तु अपने दफ्तर से छुट्टी लेकर वह मित्रता और शिष्टाचार के नाते ही मेरे साथ आया है।" वह घबड़ा कर सोचने लगा—"फिर भी उसकी माँ के समान इस स्नेह में मुझे घृणा हो गई है। वह अच्छा है और दयालु भी और एक दिलचस्प साथी है—परन्तु थका देने वाला। उससे उकता जाता हूँ। वह उन लोगों में से है जो केवल अच्छी अच्छी बातें करते हैं, परन्तु फिर भी तुम सोचने पर बाधित हो जाते हो कि उसकी सतह में मूर्खता भरी पड़ी है।

अगले दिन ऐंड्री येफीमिच ने कहा कि वह अभी तक बीमार है और अपने कमरे में ही रहा। वह सोफा की ओर अपनी पीठ करके लेटा रहा, जब अपने मित्र की बातें सुन रहा था तो वह उकता गया और उसके चले जाने पर उसे बहुत प्रसन्नता हुई। उसे अपने आप पर ही क्रोध आ रहा था कि क्यों वह घर छोड़ कर आया? उसे मिखेल एवीरिच पर भी क्रोध आरहा था क्योंकि वह प्रति दिन अधिक बकवास करने लगा था और उसके साथ बहुत स्वतंत्र और बेतकल्लुफ हो गया था जिसके परिणाम स्वरूप वह अपने विचारों को ऊंचे स्वर पर एकाग्रचित नहीं कर पाता था।

"जिंदगी की वे वास्तविकतायें अब मेरी परीक्षा ले रही हैं जिनका कि आईवन डिमिट्री किया करता था।" उसने अपनी नीचता पर क्रोधित होते हुए सोचा—परन्तु यह तोमामूली सी समस्या है—मैं घर लौट जाऊँगा और बस जिंदगी फिर पहले की तरह ही हो जायेगी। पीटर्सबर्ग में भी उसने

मास्को के कार्यक्रम को दोहराया। सारा सारा दिन वह अपने कमरे से बाहिर नहीं निकलता था वरण सोफा पर लेटा रहता था और वहां से उसी समय उठता था जब उसकी बीयर पीने की इच्छा होती थी।

सारे समय मिखेल एवींरिच को वारसा पहुंचने की जलदी लगी रही

"मेरे दोस्त मैं वहां क्यों जाऊं ?" एंड्री येफीमिच ने विनीत भाव से प्रार्थना करते हुए कहा—"तुम वहां जाओ और मुझे वापिस घर जाने दो मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं।"

"यह बात मैं लाख रुपये लेकर भी नहीं मान सकता।" मिखेल एवींरिच ने उसका विरोध करते हुए कहा—"वारसा एक आश्चर्य जनक शहर है। वहां मैंने अपनी जिंदगी के सबसे सुन्दर दिन बिताये हैं।

एंड्री येफीमिच का जिद्दी स्वभाव नहीं था और मन ही मन दुःखित होता हुआ वह अपने मित्र के साथ वारसा आ गया। वहां पहुँच कर वह सारा दिन अपने होटल में सोफा पर लेटा रहता था और अपने आप पर क्रोधित होता था और बेरों से झगड़ता था क्योंकि वे रूसी भाषा को नहीं समझते थे मिखेल एवींरिच सदा की भांति स्वस्थ प्रसन्नमुख और स्फूर्तिमय था वह प्रातः से लेकर शाम तक घूमा करता था और अपने पुराने परिचितों को ढूंढा करता था। कितनी ही रातें उसने बाहिर बिताई एक बार कहीं एक रात बिता कर वह तड़के ही वापिस आ गया वह बहुत परेशान और उत्तेजित था। कितनी ही देर तक वह कमरे के चक्कर लगाता रहा और अन्त में रुक गया और कहने लगा।

"सबके सामने अपनी इज्जत रखनी चाहिए।"

फिर वह कमरे में इधर उधर घूमता रहा अपने सिर को अपने हाथों में पकड़ लिया और शोक में कहा।

"हां सब के सामने मेरी इज्ज़त का प्रश्न है। वह घड़ी कितनी मनहूस थी जब यहां आने का विचार मेरे मन में आया।—मेरे प्यारे दोस्त," उसने ऐंड्री येफीमिच की ओर मुड़ कर कहा, "मै ताश में बहुत अधिक हार चुका हूं मुझे पांच सौ रुबल उधार दे दो।"

ऐंड्री येफीमिच ने उतनी रक्म गिनी और चुप चाप अपने मित्र को दे दी। मिखेल एवीरिच का मुख लज्जा और तिरस्कार से लाल हो गया। उसने व्यर्थ में असंगत भाव से अपने को बददुआयें दी अपनी टोपी पहनी और बाहिर चला गया। दो घंटे तक गायब रह कर वह फिर लौट आया आराम कुर्सी पर धम से गिर पड़ा और ज़ोर से एक ठंडी आह भरी और कहा।

"मेरी इज्जत बच गई है। मेरे दोस्त अब हमें यहां से चलदेना चाहिए। अब एक भी मिनट मै इस मनहूस शहर मे नहीं रहना चाहता। यहां सब के सब लोग बदमाश हैं —आस्ट्रिया के जासूस—"

जब दोनों यात्री लौटे तो नवम्बर का आरम्भ था और सड़के बरफ से ढकी हुई थी। डाक्टर खोबोफ ने हस्पताल में डाक्टर ऐंड्री येफीमिच का स्थान सभाँल लिया था परन्तु अपने ही मकान में रहता था। वह ऐंड्री येफीमिच के लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था जिससे उसके सरकारी मकान खाली करने पर वह वहां रहने लगे। जिस भद्दी सी स्त्री को वह अपनी रसोई बनाने वाली बतलाता था वह तो एक हिस्से में रहने भी लग गई थी। हस्पताल के विषय में नई नई अफवाहें शहर में फैल रही थीं। यह कहा जाता था कि उस भद्दी स्त्री का सुपरिंटेंडेंट से झगड़ा हो गया था और सुपरिंटेंडेंट ने घुटनों के बल झुक कर उससे क्षमा मांगी थी। आते ही ऐंड्री येफीमिच को अपने लिये एक नया मकान खोजना पड़ा।

"मेरे दोस्त" पोस्टमास्टर ने डर कर उस से कहा—"मुझे इस तरह का प्रश्न पूछने के लिये क्षमा करना तुम्हारे पास कितना रुपया है?"

एँड्रीं येफीमिच ने चुपचाप अपने रुपये गिने और कहा ।

"८६ रूबल"

"तुम मेरा मतलब नहीं समझे।" मिखेल एवीरिच ने घबड़ा कर कहा, मैं पूछता हूं कि तुम्हारे पास जमा किया हुआ कुल कितना—?

"मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूं—८६ रूबल—इसके अतिरिक्त मेरे पास और कुछ भी नहीं है।"

मिखेल एवीरिच अच्छी तरह जानता था कि डाक्टर ईमानदार और साफ दिल का आदमी है । परन्तु उसको विश्वास था कि उसके पास उसकी जमा की हुई पूँजी बीस हजार रूबल से कम नहीं है। अब यह जान कर कि उसका मित्र फकीर है और उसके पास जीवित रहने का कोई साधन नहीं है वह रोने लगा और डाक्टर को अपने सीने से चिपका लिया ।

भिखमंगा

ऐंड्री येफीमिच तीन खिड़कियों वाले श्रीमती बिलोफ के मकान में आकर रहने लगा जो छोटे व्यापारी वर्ग की एक स्त्री थी। इस मकान में केवल तीन कमरे और एक रसोई थी। इनमें से दो कमरे—जिनकी खिड़कियों का मुंह बज़ार की ओर था—डाक्टर के पास थे और तीसरे कमरे और रसोई में जिसमें मकान मालकिन, उसके तीन बच्चे और द्रुष्का रहते थे। कभी कभी बिलोफ का प्रेमी जो कहीं मज़दूर था—शराब पी कर रात को यहां आकर शोरगुल मचाया करता था जिससे द्रुष्का और बच्चे डर जाते थे। वह आकर जब रसोई घर में बैठ जाता और शराब मांगता तो सब बाहिर भीड़ लगा कर खड़े हो जाते थे। और डाक्टर दया करके रोते हुए बच्चों को अपने पास उठा लाता था और फर्श पर सुला देता था। इससे सदा उसे बहुत शांति मिलती थी।

पहले की भाँति वह आठ बजे प्रातःकाल सोकर उठता था नाश्ता करके वह पुरानी पुस्तकें और पत्रिकायें पढ़ने लगता था। नई किताबें खरीदने के लिए उसके पास पैसे नहीं थे। परन्तु पढ़ने में अब उसे कोई दिलचस्पी नहीं रह गई थी और वह पढ़ते समय ऊबने लगता था—इस का कारण था तो यह हो सकता है कि किताबें पुरानी थीं या चारों ओर का वातावरण भी बदला हुआ था। अतः अपना समय काटने के लिए उसने अपनी किताबों की एक विस्तृत सूची बनाई और उनके पीछे वे लेबल चिपका दिये और इस तरह का मशीन की भाँति किया हुआ काम उसे पढ़ने की अपेक्षा अधिक दिलचस्प लगा। जितना अधिक थकाने वाला और निरर्थक काम वह करता उतनी ही शान्ति उसके मस्तिष्क को मिलती उसका सोचना बन्द हो जाता

और समय जल्दी ही कटजाता। यहां तक कि रसोई में बैठ कर द्रुष्का के साथ आलू काटना या अनाज में से कूड़ा करकट छांटना उसे अच्छा लगने लगा। शनिवार और रवीवार को वह गिरजे में जाता। दीवार का सहारा लगा कर वह खड़ा हो जाता और अपनी आँखें बन्द करके अपने पिता, माता, यूनिवसटी और धर्म के विषय में सोचने लगता। वह शांन्त और उदास हो जाता और गिरजे से उठ कर शोक करने लगता कि प्रार्थना अधिक समय तक क्यों नहीं होती रही।

दो बार वह आईवन डिमिट्री से मिलने के लिए हस्पताल गया। परन्तु दोनों बार डिमिट्री बहुत नाराज हुआ उसने कहा कि वह उसे शान्ति से जिंदगी बिताने दे और वह बेकार की बातों से बहुत पहले ही ऊब चुका है, और वह इन नीच बेकार के लोगों से बचने के लिए अकेले जेल में रहना पसन्द करता है। क्या उसकी यह प्रार्थना भी ठुकरा दी जायेगी। जब एन्ड्री येफीमिच ने उससे विदा ली और नमस्कार किया तो उसने जोर से चिल्ला कर कहा

"तुम अपने आप को शैतान के पास ले जाओ।"

और एँड्री येफिमीच निश्चय नहीं कर पा रहा था कि उसे तीसरी बार जाना चाहिए या नहीं? परन्तु वह जाना चाहता था।

पुराने दिनो में खाने के पश्चात एन्ड्री येफिमिच को कमरों मे घूमने और सोचने की पुरानी आदत थी। परन्तु अब खाना खाकर चाय के समय तक वह दीवार की ओर मुंह कर सोफा पर लेटा रहता था और भाँति भाँति के विचार उसे घेरे रहते थे जिन पर विजय पाना उसे असम्भव सा प्रतीत होता था। वह इसे अपना अपमान समझता था और मन ही मन दुखित होता था कि बीस साल तक नौकरी करने के पश्चात न उस को पेन्शन मिली और न ही कोई पुरस्कार। यह बात सत्य है कि उसने अपना काम ईमानदारी

से नहीं किया परन्तु बिना भेद भाव के सारे पुराने कर्मचारियों को क्या पेन्शन नहीं दी जाती ? वे इस बात को नहीं देखते कि क्या कोई कर्मचारी ईमानदार रहा है या नहीं ? आधुनिक युग के नियम किसी व्यक्ति को कोई पद, कोई काम या पेन्शन उसकी नैतिकता एंव योग्यता पर नहीं देते तब केवल उसी पर क्यों वे नियम लागू किये जायें ? उसके पास एक भी पैसा नहीं था। उसे उस दूकान के पास से गुजरते हुए शरम आती थी कि कहीं दूकान का मालिक न मिल जाये। बीयर (शराब) का ही ३२ रुबल का उधार उसके सिर पर चढ़ा हुआ था। उसने मकान मालिकिन का भी उधार देना था वह चुपके चुपके पुराने कपड़े और किताबें बेच आती थी। और मकान मालकिन से यह कह कर झूठ बोल दिया करती थी कि उसके मालिक के पास अभी ढेर रुपया आने वाला है।

ऐंड्री येफीमिच को अपने ऊपर ही क्रोध आने लगता था कि उसने अपने बचाये हुए एक हजार रुबल यात्रा में क्यों खर्च कर डाले ? वह एक हजार रुबल से इस समय क्या नहीं कर सकता था ? उसे इस बात पर भी क्रोध आता था कि दूसरे लोग उसे अकेला क्यों छोड़ नहीं देते ? खोबोफ अपने बीमार साथी के घर समय समय पर चक्कर लगाना अपना कर्तव्य समझता था। परन्तु ऐंड्री येफीमिच को उसकी हर एक बात से घृणा थी। उसका संतोष भरा चेहरा उसका विनीत आचार व्यवहार उसका साथी शब्द और उसके ऊंचे ऊंच बूट, सब से उसे घृणा थी। परन्तु सब से अधिक क्रोध उसे उस समय आता था जबकि खोबोफ उसका इलाज करना अपना कर्त्तव्य समझता था और कभी कभी तो यह कल्पना भी करने लगता था कि वह उसका इलाज कर रहा है। हर बार अपने साथ वह कुछ दवाइयें ले आता था।

मिखेल एवीरिच भी अपने बीमार मित्र के पास जाकर उसका मनोरंजन करना अपना कर्त्तव्य समझता था। वह स्नेहभरी बेतकल्लुफी के साथ उसके

उसके कमरे में आता था, बड़े अस्वाभाविक ढंग से हंसता था और ऐंड्री येफीमिच को विश्वास दिलाता था कि आज वह अन्य दिनों की अपेक्षा अच्छा है और भगवान को धन्यवाद देता था। इसी से पता चलता था कि वह मन ही मन उसकी हालत को खतरनाक समझता था। उसने अभी तक वारसा में उधार ली हुई रकम वापिस नहीं की थी और उसी की विवशता से लज्जित होकर वह और भी जोर जोर से हंसने लगता था और बेसिर पैर की छोटी छोटी कहानियां कहने लगता था। उसकी कहानियां कभी समाप्त न होने वाली मालूम देती थीं और ऐंड्री येफीमिच और अपने आप दोनों के लिए दुःख का कारण बनी हुई थीं।

जब पोस्टमास्टर मकान में रहता तो ऐंड्री येफीमिच प्रायः सोफा पर लेटा रहता था और अपने दाँत भींचे दीवार की ओर मुंह किये उसकी बातें सुना करता था। उसे ऐसा प्रतीत होता था मानो उसके हृदय में एक प्रकार की दरार सी बनी जा रही है और पोस्टमास्टर के आने के बाद यह और भी चौड़ी होती जाती है और उसे डर है कि कहीं यह गले तक न पहुंच जाये। इन छोटी मोटी पीड़ाओं से छुटकारा पाने के लिए वह सोचा करता था कि वह, खोबोफ और मिखेल एवीरिच सब के सब एक दिन समाप्त हो जायेंगे और पीछे कोई भी चिन्ह शेष नहीं रह जायेगा। दस लाख सालों पश्चात एक उड़ती हुई आत्मा सारे विश्व को सर्दी से बरफ बने हुए और नंगे पत्थरों को देखेगी। सब—संस्कृति और नैतिकता—समाप्त हो जायेगी। यहां तक कि झाड़ियां भी न उग सकेंगी। तब फिर वह एक साधारण से दुकानदार, महत्वहीन खोबोफ और मिखेल एवीरिच की भयानक मित्रता के विषय में सोच कर अपने को लज्जित क्यों करे? यह सब उसकी मूर्खता और वृथा अभिमान है।

परन्तु इस प्रकार के तर्कों से उसे शान्ति नहीं मिलती थी। ज्योंहीं वह दस लाख वर्षों के पतन के उपरान्त बर्फ बने हुए विश्व की कल्पना करता तभी

एक नंगी चट्टान के पीछे से खोबोफ अपने ऊंचे ऊंचे जूते पहने निकलता और उसके पीछे मिखेल एवारिच होता जो स्नेह भरी हंसी और लज्जा के कारण धीमे स्वर में कहता—"और वारसा में तुम से लिया हुआ उधार, ओ बूढ़े, मैं कुछ ही दिनों में उसे चुका दूंगा और कोई बहाना नहीं करूंगा।"

एक दिलचस्प रोगी

एक बार खाना खाने के पश्चात शाम के समय मिखेल एवीरिच उसके घर आया जब कि ऐंड्री येफ़ीमिच सोफ़ा पर लेटा हुआ था। उसी समय खोबोफ भी अपनी दवा लेकर वहां आ पहुँचा। ऐंड्री येफ़ीमिच धीरे से उठा और फिर बैठ गया और अपने हाथों से सोफा के किनारे पकड़ लिये।

"आज,मेरे मित्र" मिखेल एवीरिच ने कहा—"आज तुम्हारा चेहरा कल की अपेक्षा अधिक स्वस्थ दिखाई दे रहा है। अब तो तुम ठीक हो गये हो, भगवान की सौगन्ध, तुम सचमुच ठीक हो गये हो!"

"समय आ गया है, मेरे साथी, अब तुम्हारे ठीक होने का समय आ गया है।" खोबोफ ने ऊंघते हुए कहा—"इस विलम्ब से तुम स्वयं भी ऊब गये होगे।"

"कोई बात नहीं, हम जल्दी ही अच्छे हो जायेंगे।" मिखेल एवीरिच ने प्रसन्न होकर कहा—"हम सौ साल तक और जियेंगे। ओह!"

"शायद सौ साल नहीं, लेकिन बीस साल तक तो आसानी से जीवित रह सकते हो," खोबोफ ने आश्वासन देते हुए कहा—"कोई फ़िक्र न करो मेरे साथी, चिन्ता की कोई बात नहीं है।"

"हम दूसरों को दिखा देंगे।" मिखेल एवीरिच ने अपने मित्र के चुटने को थपथपाते हुए हंस कर कहा—"हम लोगों को अपनी तरकीब का परिणाम दिखा देंगे। अगर भगवान ने चाहा तो अगली गर्मियों में हम कोकेशस चले जायेंगे और सारे देश में घोड़ों की पीठ पर दौड़ते फिरेंगे.. ...द्वार. .द्वार . द्वार।

और कौकेशस से लौट कर हम तुम्हारी शादी की खुशी में नाचेंगे।" मिखेल एवीरिच ने धूर्तता से आँख का संकेत करते हुए कहा—"मेरे दोस्त, हम तुम्हारी शादी करा देंगे, तुम्हारे लिये वहीं से वधू की खोज कर लेंगे।"

ऐंड्री येफीमिच ने अनुभव किया मानों वह दरार उसके गले तक पहुँच चुकी है। उसका हृदय वेदना से धड़कने लगा।

"यह सब बेवकूफों की सी बातें हैं।" अचानक उठ कर खिड़की के पास जाते हुए उसने कहा—"क्या यह सम्भव है कि तुम यह नहीं जानते कि तुम बेवकूफों जैसी बातें कर रहे हो?"

वह अपने अतिथियों से नम्रता और सभ्यता से बोलना चाहता था परन्तु वह अपने आपको रोक नहीं सका और अपनी इच्छा के विरुद्ध अपनी मुट्ठियां बांध कर अपने सिर के ऊपर उन्हें धमकाने की मुद्रा में अपने हाथ ऊपर उठाये।

"मुझे अकेला छोड़ दो।" उसने ऐसे अजीब से स्वर में कहा जो उसका अपना नहीं था। उसका मुंह लाल हो गया और उसका सारा शरीर कांपने लगा। "चले जाओ, तुम दोनों चले जाओ! जाओ।"

मिखेल एवीरिच और खोबोफ दोनों उठ खड़े हुए और पहले आश्चर्य और भयभीत मुद्रा में उसकी ओर देखा।

"तुम दोनों चले जाओ!" ऐंड्री येफीमिच ने कहा—"जंगली, बेवकूफ! मूर्खों, मुझे तुम्हारी मित्रता और दवाइयों की जरूरत नहीं है! यह नीचता है, घृणित है!"

खोबोफ और पोस्टमास्टर दोनों ने घबड़ा कर एक दूसरे की ओर देखा। दरवाजे तक जाते समय उनके पैर लड़खड़ाने लगे और हाल में चले गये। ऐंड्री येफीमिच ने दवाई की बोतल उठाई और उनके पीछे फैंकी, जो दरवाजे से टकरा कर चूर चूर हो गई।

"अपने आप को यमदूत के पास ले जाओ।" उसने चिल्ला कर कहा और हाल में उनके पीछे पीछे दौड़ा —"यमदूत के पास जाओ।"

अपने महमानों के जाने के पश्चात वह सोफा पर लेट गया और कांपने लगा मानों उसे ज्वर चढ़ आया हो और अपने शब्द दोहराये —

"बेवकूफ, बुद्धू"

जब उसका क्रोध शान्त हुआ तब पहला विचार उसके मस्तिष्क में यह आया कि बेचारा मिखेल एवीरिच बहुत ही लज्जित और दुःखी हो रहा होगा और जो घटना अभी अभी घटी है वह सचमुच ही बहुत भयानक थी। इस प्रकार की ऐसी कोई घटना कभी पहले नहीं घटी। उसकी बुद्धि और चतुराई उस समय कहां गायब हो गई थी? संसार को समझने की उसकी शक्ति और उसकी फिलासफी मरी उदासीनता का कहां लोप हो गया था?

लज्जा और घबड़ाहट से डाक्टर सारी रात जागता रहा। अगले दिन प्रातःकाल के ९ बजे वह पोस्ट आफिस गया और पोस्ट मास्टर से क्षमा मांगी।

"जो कुछ हुआ, उसकी चर्चा अब मत करो।" पोस्टमास्टर ने एक आह भरते हुए कहा। ऐंड्री येफीमिच के व्यवहार से द्रवित होकर उसने प्रेम से उसके हाथ दबाये—"किसी को भी इन मामूली झगड़े पर ध्यान नहीं देना चाहिए।—लुबेकिन!" वह इतनी जोर से चिल्लाया कि क्लर्क और दूसरे लोग कांप उठे—"एक कुर्सी लाओ—और तुम जरा ठहरो।" उसने एक किसान स्त्री से चिल्ला कर कहा जो सींखचों मे से एक रजिस्टर्ड लिफाफा दे रही थी "तुम क्या देखती नहीं कि मैं काम में व्यस्त हूँ?—हम वह घटना बिल्कुल भूल जायेंगे" उसने ऐंड्री येफीमिच की ओर मुड़ कर बड़े स्नेह से कहा—"मेरे बूढ़े दोस्त, बैठ जाओ"

वह चुपचाप अपनी भौंहों को एक मिन्ट तक सहलाता रहा और फिर बोला।

"उसका बुरा मानने का विचार कभी मेरे दिमाग में नहीं आया। मैं जानता हूं कि बिमारी में मनुष्य की अवस्था कितनी विचित्र सी हो जाती है। कल तुम्हारे दौरे से मैं और डाक्टर दोनों ही डर गये और हम तुम्हारे विषय में कितनी ही देर तक बातें करते रहे। मेरे दोस्त, तुम अपनी बिमारी पर अधीक ध्यान क्यों नहीं देते? क्या तुम समझते हो कि इसी प्रकार तुम्हारी गाड़ी चलती रहेगी? मैं एक मित्र के नाते बिल्कुल साफ साफ बातें कर रहा हूं सो उसके लिए क्षमा करना।" उसने अपना स्वर बहुत धीमा कर लिया, "परन्तु तुम बड़े शोचनीय वातावरण में रहते हो—बन्द, गन्दगी, कोई तुम्हारी देखभाल करने वाला नहीं है—कोई तुम्हारी सेवा करने वाला नहीं है—मेरे प्यारे दोस्त, मैं और डाक्टर दोनों तुमसे अनुरोध करते हैं—हमारी राय को सुनो—तुम हस्पताल चले जाओ। वहां तुम्हें अच्छा पौष्टिक भोजन मिलेगा। तुम्हारी देखभाल होगी और इलाज भी। किदोरिच एक योग्य आदमी है और तुम उस पर पूर्ण रूप से भरोसा कर सकते हो। उसने मुझसे प्रतिज्ञा की थी कि वह तुम्हारी देखभाल करेगा।"

एंड्री येफीमिच अपने मित्र के अपने प्रति स्नेह भरे शब्द सुन कर द्रवित हो गया और पोस्टमास्टर के गालों पर लुढ़कते हुए आंसू देखकर उसे अपने ऊपर बहुत क्षोभ हुआ।

"मेरे प्यारे दोस्त, उनका विश्वास मत करो।" उसने अपने मित्र के हृदय पर हाथ रख कर धीमे स्वर में कहा—"यह सब धोखा है। मेरी शिकायत तो केवल इतनी ही है कि बीस वर्षों में इस शहर में मुझे केवल एक ही बुद्धिमान व्यक्ति मिला और वह एक पागल था। मुझे और कोई बिमारी नहीं है। मेरा दुर्भाग्य यही है कि मैं ऐसे जादू के दायरे में फंस गया हूं जहां से बाहिर निकलने का कोई रास्ता नहीं है। मेरे लिए यह सब एक समान है—मैं सब के लिये तैयार हूं।"

"तब तुम हस्पताल जाने को राजी हो।"

"मेरे लिए सब बराबर है, कहो तो नरक में भी जा सकता हूँ।"

"मेरे सामने प्रतिज्ञा करो मेरे दोस्त कि तुम किदोरिच की हर बात मानोगे।"

"मैं प्रतिज्ञा करता हूं। परन्तु मैं फिर कहता हूँ कि मैं एक जादू के दायरे में फंस गया हूँ। अब तो हरएक बात—यहां तक कि मेरे मित्रों की सच्ची राय भी—केवल एक ही उद्देश्य की ओर मुझे ले जाती है और वह है मेरा सर्वनाश। मैं मिटा जा रहा हूँ और यह स्वीकार करने का मेरे पास साहस है।

"पागल न बनो, तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगे।"

"इस तरह की बातें करने का क्या लाभ है?" एंड्री येफीमिच ने खीझ कर कहा, बहुत कम लोग ऐसे हैं जो अपनी जिंदगी के सांयकाल में वह अनुभव नहीं करते जो मैं कर रहा हूँ। जब लोग तुम से कहते हैं कि तुम्हें गुरदे और कमजोर दिल की शिकायत है और तुम्हारा इलाज करना शुरू कर देते हैं। जब कि वे तुमसे कहते हैं कि तुम पागल हो या हत्यारे हो—संक्षेप में जब वे अपना ध्यान तुम्हारी ओर आकर्षित करने लगते हैं—तो तुम यह समझ सकते हो कि तुम एक जादू के दायरे में फंस गये हो जहां से बाहिर निकलने का कोई दूसरा रास्ता नहीं है। तुम भागने की कोशिश कर सकते हो परन्तु उससे तुम्हारी स्थिति और भी अधिक बिगड़ जायेगी। तुम्हें अपने आप को दूसरों के हवाले छोड़ देना चाहिए क्योंकि मनुष्य का कोई भी प्रयास तुम्हें बचा नहीं सकता। मुझे तो ऐसा ही मालूम देता है।"

इस समय तक बहुत से लोग पोस्ट आफिस की खिड़की के सामने खड़े हो गये थे। एंड्री येफीमिच ने पोस्टमास्टर के काम में बाधा डालना उचित

नहीं समझा और उसने उससे बिदा ली। मिखेल ऐवीरिच ने एक बार फिर उससे प्रतिज्ञा करा ली और उसे दरवाजे तक छोड़ने आया।

उसी दिन शाम के समय, छोटा सा खाल का कोट और ऊँचे जूते पहन कर खोबोफ अचानक उसके घर आया और ऐसे स्वर में कहा मानों कल की घटना का उसके लिए कोई महत्व नहीं था।

"मैं किसी काम से तुम्हारे पास आया हूँ। मैं चाहता हूँ कि अपनी राय देने के लिए तुम मेरे साथ आओ। एँह—"

यह सोच कर कि खोबोफ उसके साथ सैर करके उसका मन बहलाना चाहता है या कुछ रूपया कमाने का कोई साधन बतलाना चाहता है, ऐंड्री येफीमिच ने कपड़े पहने और बजार में उसके साथ निकल पड़ा। उसे प्रसन्नता हो रही थी कि अपने कल के अशिष्ट और असभ्य व्यवहार के लिए क्षमा माँगने का उसे अच्छा अवसर मिला है। इस ऊपर के समझौते पर वह परमात्मा का धन्यवाद दे रहा था और खोबोफ के प्रति कृतज्ञता अनुभव कर रहा था कि उसने उस घटना की चर्चा तक नहीं की। इस असभ्य व्यक्ति से इस प्रकार के व्यवहार की आशा भला कौन कर सकता है?

"और तुम्हारा रोगी कहां है" ऐंड्री येफीमिच ने पूछा।

"हस्पताल में, बहुत दिनों से मैं तुम्हें उसे दिखलाना चाहता था। वह एक बहुत ही दिलचस्प रोगी है।"

वे दोनों हस्पताल के हाते में घुसे और मुख्य इमारत पार करके उस भाग में गये जहां पागलों को बन्द किया हुआ था। हाल में घुसते ही नीकिता सदा की भांति उछल कर सीधा खड़ा हो गया।

"इनमें से एक पागल के फेफड़ों में ऐसी विचित्र सी खराबी हो गई है।" ज्योंही वे वार्ड में घुसे तब खोबोफ ने ऐंड्री येफीमिच से धीमे स्वर में कहा— "लेकिन तुम यहीं ठहरो। मैं अभी वापिस लौटता हूँ। मैं अपना एक यंत्र ले आऊं।" और वह कमरे से बाहिर चला गया।

सर्दी का पसीना

शाम हो चुकी थी। आईवन डिमिट्री तकिये में अपना मुंह छिपाये अपनी चारपाई पर लेटा हुआ था। लकवे का रोगी स्थिर होकर बैठा था और चुपचाप होंठ चबाता हुआ रो रहा था। वह मोटा किसान और पुराना डाकिया सो रहे थे। बहुत सन्नाटा छाया हुआ था।

ऐंड्री येफीमिच आईवन डिमिट्री की चारपाई पर बैठ गया और उसे देखता रहा। आध घंटा बीत गया परन्तु खोबोफ नहीं लौटा। खोबोफ के बदले नीक्ता अपने हाथ में एक गाऊन, कुछ कपड़े और स्लीपरों की एक जोड़ी लिये आया।

"हुजूर, ये आपके पहनने के लिए हैं।" उसने शान्त स्वर में कहा—"यह तुम्हारी चारपाई है। कृपया इस तरफ चले आइये।" अभी हाल ही में बिछाई हुई एक खाली चारपाई की ओर संकेत करते हुए उसने कहा—"आप चिन्ता न कीजिये। भगवान की कृपा से आप जल्दी ही अच्छे हो जायेंगे।"

ऐंड्री येफीमिच यह सारी घटना समझ गया। बिना एक शब्द कहे वह नीक्ता की बताई हुई चारपाई पर जाकर बैठ गया। नीक्ता को प्रतीक्षा करते हुए देख कर उसने अपने कपड़े उतार दिये और लज्जा का अनुभव करने लगा। उसने हस्पताल के कपड़े पहन लिये, कुछ तो बहुत छोटे थे, कमीज़ बहुत लंबी थी और गाऊन में से जली हुई मछली की दुर्गन्धि आ रही थी।

"भगवान ने चाहा तो तुम बहुत जल्दी अच्छे हो जाओगे।" नीक्ता ने अपने शब्द दोहराये।

उसने ऐंड्री येफीमिच के कपड़े उठाये और बाहर जाकर दरवाजा बन्द कर दिया। "मेरे लिए यह सब एक बराबर है" ऐंड्री येफीमिच ने सोचा और शर्म से गड़ कर उसने गाऊन अपने चारों ओर लपेट लिया और अपने नये वस्त्रों में वह एक अपराधी की भांति अनुभव करने लगा। "मेरे लिये सब एक बराबर है। साधारण कपड़े, फौजी वर्दी या यह गाऊन सब एक समान है।" परन्तु उसकी घड़ी ? और जेब में रक्खी उसकी नोट बुक ? और उसकी सिगरेटें ? नीक्ता उसके कपड़े कहां ले गया ? अपने मरते दम तक वह अब कभी पैजामा, वास्कट या जूते नहीं पहन सकेगा पहले पहल तो उसे यह सब कुछ विचित्र सा लगा और उसे विश्वास नहीं हो सका। ऐंड्री येफीमिच को पक्का विश्वास हो गया कि श्रीमती बिलोफ के मकान और वार्ड नम्बर छः में कोई अन्तर नहीं है और संसार की सब वस्तुएं निरर्थक और वृथा अभिमान वाली हैं। परन्तु वह अपने हाथों को कांपने से नहीं रोक सका और उसके पांव सुन्न पड़ गये थे। उसे यह सोच कर भी दुःख हो रहा था कि आईवन डिमिट्री जाग कर उसे इन वस्त्रों में देखेगा। वह उठ खड़ा हुआ, कमरे में इधर उधर घूमने लगा और फिर आकर बैठ गया। वह आध घंटा तक बैठा रहा और उकता कर उसकी उदासी चरम सीमा को पहुंच गई। क्या यहां पर एक दिन, एक सप्ताह या सालों रहना सम्भव हो सकेगा जैसे कि दूसरे लोग यहां रह रहे हैं ? उसे बैठना चाहिए, कुछ कदम चल कर फिर बैठ जाना चाहिए, और उसके बाद वह खिड़की से बाहर झांके, और फिर कमरे के एक कोने से दूसरे के चक्कर लगाता रहे। और उसके बाद ? सारा दिन बुत की भांति चुपचाप बैठ कर सोचा करे। नहीं, यह असम्भव है।

ऐंड्री येफीमिच अपनी चारपाई पर लेट गया परन्तु फिर एकदम उठ खड़ा हुआ और अपने हाथ से माथे का ठंडा पसीना पोंछा और अनुभव किया मानो उसके सारे मुख से सूखी हुई मछली की दुर्गन्धि आ रही है। वह वार्ड में फिर इधर उधर टहलने लगा।

"कोई गलती अवश्य हो गई है। उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठा कर कहा—"इस गलती को समझने की आवश्यकता है, यह जरूर ही गलती है।" इसी क्षण आईवन डिमिट्री जाग उठा। वह चारपाई पर उठ कर बैठ गया, और अपने सिर और हाथों को सहारा दिया और थूका। तब उसने डाक्टर पर एक निरर्थक दृष्टि डाली जिससे पहले पहल उसकी समझ में कुछ नहीं आ सका। परन्तु शीघ्र ही उसका नींद से भरा मुख घृणा और उपेक्षा से चमक उठा।

"तो मेरे दोस्त, वे तुमको यहां ले आये।" नींद में डूबे हुए रूखे से स्वर में उसने बोलना आरम्भ किया। उसने अपनी एक आँख झपकाई। "मुझे बहुत खुशी हुई! तुमने दूसरे लोगों का खून पिया और अब ये लोग तुम्हारा खून पियेंगे! क्या बात है!"

"मुझे यहां लाने में उन्होंने कोई गलती की है.. ...."उस पागल के शब्दों से भयभीत होकर ऐंड्री येफीमिच ने कहा। उसने अपने कंधे हिलाये और अपने शब्दों को दोहराया—"कोई न कोई भूल अवश्य हुई है.. ....."

आईवन डिमिट्री ने पुनः थूका और अपनी चारपाई पर लेट गया। कैसी भयानक जिंदगी है। वह गुर्राया। परन्तु सब से बुरी और घृणित बात यहाँ यह है कि यहां मनुष्य की जिंदगी अपने दुःखों का फल पाकर समाप्त नहीं होती बल्कि उसका अन्त मृत्यु में होता है। लोग उसकी लाश को हाथों और पैरों से पकड़ कर घसीट ले जाते हैं। बर...र...ा—ऐसी एक आवाज होती है बस! इस संसार में हमने जितने दुःख भोगे हैं उनका फल हमें दूसरी दुनिया में मिलेगा। उस दूसरी दुनिया में मैं एक छाया के रूप में आऊंगा और इन अत्याचारियों को डराऊंगा..... ...मैं इनके सिर के बाल सफेद कर दूंगा!"

मोजेका वार्ड में घुसा और डाक्टर को देख कर उसने अपना हाथ फैलाया और कहा—

"मुझे एक कोपेक दो।"

खोलो ! मैं आज्ञा देता हूं !

ऐंड्री येफीमिच खिड़की के पास गया और बाहिर खेतों की ओर देखा। अंधेरा गाढ़ा हो रहा था और क्षितिज पर ठंडा, नीले रंग का चांद उग आया था। हस्पताल की चहारदीवारी से लगभग दो सौ गज की दूरी पर एक ऊंची सी सफेद इमारत पत्थरों की दीवार से घिरी खड़ी थी। यह जेलखाना था।

"यही वास्तविकता है।" ऐंड्री येफीमिच ने सोचा और वह भयभीत हो गया।

सब कुछ अत्यन्त भयानक था। चांद, जेलखाना, झाड़ियों के कांटे और दूर मिल की चिमनी से निकलता धुंआ सब भयानक लग रहे थे। ऐंड्री येफीमिच खिड़की से दूर हट गया और उसने अपने सामने एक आदमी को देखा जिसकी छाती पर चमकते हुए तमगे आदि टंगे हुए थे। वह व्यक्ति मुस्कुराया और धूर्तता से उसने आँखें झपकाईं। और यह भी उसे बहुत भयानक प्रतीत हुआ।

उसने अपने आप को विश्वास दिलाना चाहा कि चांद और जेल में कोई विशेष बात नहीं है और ठीक दिमाग वाले लोग भी तमगे पहनते हैं और अच्छी से अच्छी वस्तुऐं भी अपना समय आने पर नष्ट हो जाती है। परन्तु अचानक ही उसे निराशा ने आ घेरा, उसने अपने दोनों हाथों से खिड़की की लोहे की कड़ियों को पकड़ लिया और अपनी सारी शक्ति के साथ उन्हें हिलाया। परन्तु वे उसी प्रकार अपने स्थान पर अड़ी रहीं।

अपना शोक कम करने के लिए वह आईवन डिमिट्री की चारपाई पर आकर बैठ गया।

"मेरे दोस्त मैं अपनी सारी शक्तियां खो बैठा हूं।" उसने हकलाते और कांपते हुए कहा और अपने चेहरे से सर्दी में आया हुआ पसीना पोंछ डाला। "मेरी शक्तियों का नाश हो चुका है।"

"लेकिन तुम अब चिन्तन क्यों नहीं करते।" आईवन डिमिट्री ने ताने के स्वर में पूछा।

"मेरे भगवान, हे परमात्मा—हां, हां!—एक बार तुमने कहा था कि रूस में कोई फिलासफी नहीं है परन्तु फिर भी सब लोग—यहां तक कि साधारण व्यक्ति भी सोचा करते हैं। परन्तु साधारण लोगों के चिन्तन करने से किसी को कोई हानि नहीं होती।" ऐंड्री येफीमिच ने कहा मानों वह रोना चाहता हो परन्तु क्यों, मेरे दोस्त, तुम इतनी बुरी तरह से क्यों हंस रहे हो? यदि साधारण लोगों को शान्ति नहीं मिलती तो वे भी चिन्ता क्यों न करें? एक चतुर, सभ्य, स्वामि मानी, और स्वतंत्रता से प्रेम करने वाला व्यक्ति जिसका पालन पोषण एक पवित्र वातावरण में हुआ उसके लिए इसके अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है कि वह एक गंदे बेवकूफों के शहर में डाक्टर बन कर आये और फूलदानों जोंकों और औषधि रखने के प्यालों जैसी निर्जीव जिंदगी बिताये धोखा, नीचता और कृतघ्न है। हे मेरे भगवान।"

"तुम मूर्खों जैसी बकवास करते हो। यदि तुम डाक्टर बनना नहीं चाहते थे तो तुम सरकार के मंत्री क्यों न हुये?"

"मैं मंत्री नहीं बन सकता था। मेरे दोस्त, हम कमजोर हैं। मैं आरम्भ से ही ऐसी बातों के प्रति उदासीन था और बड़ी तेजी और स्फूर्ति के साथ तर्क किया करता था अपना दिल तोड़ने और अपना त्याग करने के लिए मुझे वास्तविकता के प्रथम स्पर्श की आवश्यकता नहीं थी। हम निर्बल हैं और हमारा जीवन निरर्थक है। और तुम मेरे दोस्त, तुम्हारा जीवन भी व्यर्थ का

है। तुम योग्य व्यक्ति हो और तुम्हारे उँचे विचार हैं क्योंकि प्रसन्नता से झूमते हुए तुमने अपनी माँ का दूध पिया था परन्तु जिंदगी में प्रवेश करने के पूर्व ही तुम उससे उकता गये थे। हम निर्बल हैं कमजोर।"

इस भय और अपमान की भावना के साथ साथ शाम होते ही ऐंड्री येफीमिच के मन में कोई तीव्र इच्छा उसे जला रही थी। अन्त में वह इस परिणाम पर पहुँचा कि उसे सिगरेट और बीयर पीने की आवश्यकता है।

"मेरे दोस्त मैं जरा बाहिर जा रहा हूं। उसने कहा—मैं उनसे अन्दर रोशनी लाने के लिए कहूंगा...मैं इस प्रकार यहां नहीं रह सकता मेरी ऐसी हालत नहीं है।

वह दरवाजे तक गया और उसे खोला परन्तु नीकता तत्क्षण उछल कर खड़ा कर खड़ा हो गया और उसका रास्ता रोक लिया।

तुम कहां जा रहे हो तुम नहीं जा सकते, नहीं जा सकते।" वह चिल्लाया। "यह तुम्हारे सोने का समय हो गया है।"

"लेकिन केवल एक मिनट के लिये मैं जरा बाहर तक जाना चाहता हूं" एंड्री येफीमिच ने कहा।

"तुम बाहिर नहीं जा सकते, मुझे इसकी आज्ञा नहीं है। तुम तो स्वंय सब कुछ जानते हो!"

नीकता ने दरवाजा बन्द कर दिया और अपना पीठ लगा कर खड़ा हो गया। लेकिन यदि मैं बाहिर जाऊं तो इसमें तुम्हें क्या नुकसान होगा?" एंड्री येफीमिच ने पूछा "मेरी समझ में तुम्हारी बात नहीं आती। नीकता, मैं अवश्य बाहिर जाऊंगा।" उसने कांपते हुए स्वर में चिल्ला कर कहा—"मैं जरूर जाऊंगा।"

"बेकार का शोरगुल न मचाओ, यह ठीक नहीं है।" नकिता ने तनिक आदेश भरे स्वर में कहा।

"मैं नहीं समझता कि इसका क्या मतलब है!" आईवन डिमिट्री ने चारपाई से उछल कर अचानक चिल्लाते हुए कहा—"उसे क्या अधिकार है कि वह हमें बाहर जाने से रोके? हमें यहां बन्द करने का भला उन्हें साहस ही कैसे हुआ? कानून बिना किसी मुकदमे के किसी भी व्यक्ति की स्वतन्त्रता छीनने का अधिकार नहीं देता। यह हिंसा है...यह अत्याचार है!"

"अत्याचार तो है ही।" ऐंड्री येफीमिच ने डिमिट्री का साहस बढ़ाते हुए कहा—"मैं अवश्य जाऊंगा। मुझे बाहिर जाना ही है! उसे कोई अधिकार नहीं है! मैं कहता हूं कि मुझे बाहिर जाने दो।"

"क्या तुझे सुनाई देता है ओ बेवकूफ कुत्ते!" आईविन डिमिट्री ने दरवाजे पर अपनी मुट्ठियों से प्रहार करते हुए चिल्ला कर कहा—"खोल, नहीं तो मैं दरवाजा तोड़ डालूंगा! ओ खून पीने वाले!"

"खोलो।" ऐंड्री येफीमिच ने कांपते हुए चिल्ला कर कहा—"मैं आज्ञा देता हूं।"

"बके जाओ।" नकिता ने दरवाजे की दरार में से कहा—'तुम बके जाओ।'

"तो फिर फिदोरिच को बुला लाओ। उससे कहो कि मैं उससे मिलना चाहता हूं...एक मिनट के लिए।"

"कल वह यहां आयेंगे।"

"ये हमें कभी बाहिर नहीं जाने देंगे!" आईवन डिमिट्री ने चिल्ला कर कहा—"हम सब यहां पर मरेंगे! हे भगवान, क्या यह सम्भव है कि दूसरी दुनिया में नरक नहीं है, और इन सब पापियों के पाप क्षमा कर दिये जायेंगे।"

तब न्याय कहां है ? खोल पापी, मेरा सांस घुट रहा है।" ग्रोमोफ बड़े विकृत स्वर में चिल्लाया और दरवाजे पर उसने सारे शरीर से जोर का एक धक्का दिया--"ओ हत्यारो, मेरा दिमाग सिर से बाहिर निकल पड़ेगा।"

नीक्ता ने झटके के साथ दरवाजा खोला और अपने दोनों हाथों और घुटनो से ऐंड्री येफीमिच को कमरे के अन्दर धकेल दिया और बंधी मुट्ठी से उसके मुख पर पूर्ण शक्ति के साथ प्रहार किया। ऐंड्री येफीमिच को ऐसा मालूम पड़ा मानो एक लहर यकायक उसके सिर से आ टकराई हो जिसने उसे उसकी चारपाई पर उछाल दिया हो। उसे अपने मुख का स्वाद नमकीन सा जान पड़ा क्योंकि उसके जबड़ों से खून का स्रोत बह चला था। लहर के बहाव में तैरने का प्रयास करते हुए उसने अपने हाथों से चारपाई का कोना कस कर पकड़ लिया। परन्तु इस क्षण नीक्ता उसकी पीठ पर बार बार प्रहार कर रहा था।

आईवन डिमिट्री बहुत जोर से चिल्लाया। यह स्पष्ट था कि उस पर भी मार पड़ी थी।

तब पूर्ण रूप से शान्ति हो गई। छलकती हुई चाँदनी लोहे की कड़ियों में से अन्दर आ रही थी और फर्श पर प्रकाश और छाया का एक प्रकार का जाल सा बिछा हुआ था। सब के सब भयभीत थे। ऐंड्री येफीमिच चारपाई पर लेटा हुआ था और भय के कारण अपनी सांस रोके एक और प्रहार की प्रतीक्षा कर रहा था।

उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों किसी ने एक हंसिया उसकी छाती में घुसेड़ दी हो और फिर उसका सीना चीर रहा हो। अपनी पीड़ा में वह अपना तकिया चबा रहा था और दाँत पीस रहा था और इस भयानक घटना के बीच में उसके दिमाग में यह विचार आया कि यही पीड़ा और वेदना

प्रत्येक वर्ष में असहाय लोग सहने होंगे जो अब चाँदनी में काली परछाइयों की भाँति लेटे हुए हैं। बीस वर्षों तक कभी उसने यह नहीं जाना था और न ही कभी जानने की कोशिश ही की थी। उसे पता नहीं था, वह उनकी यातना से अनभिज्ञ था अतः उसे दोषी नहीं ठहराया जा सकता। परन्तु नीकता के मुक्कों की भाँति उसकी आत्मा भी उतनी ही निर्दयी और निष्ठुर थी जिससे सिर से पाँव तक बर्फ जैसी सिहरन उसके शरीर में दौड़ गई। वह अपनी चारपाई से उछल कर खड़ा हो गया और अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ चिल्लाने की कोशिश की, वह वार्ड से बाहिर भाग कर नीकता, खोबोफ सुपरिंटेंडेंट, कम्पाउन्डर और अपने आप को मार देना चाहता था। परन्तु उसके गले से एक भी आवाज़ नहीं निकली, उसके पैरों ने उसके विरुद्ध विद्रोह किया, वह साँस लेने के लिये रुका, उसने अपने गाउन और कमीज़ फाड़ डाली और बेहोश होकर चारपाई पर गिर पड़ा।

एक हरी फिल्म

अगले दिन प्रातःकाल के समय उसका सिर घूम रहा था, उसके कानों में नाना प्रकार के स्वर गूंज रहे थे और वह बहुत कमज़ोर होगया था। कल की अपनी निर्बलता की याद आते ही वह लज्जा का अनुभव करने लगा। कल उसने थोड़ा सा साहस दिखाया था, वह चाँद तक से डर गया था और उसने बड़ी ईमानदारी के साथ वे भावनायें और विचार प्रकट किये थे जिनका मस्तिष्क में होने का उसने कभी सन्देह भी नहीं किया था। उदाहरण के लिये साधारण व्यक्तियों का चिन्तन के प्रति असन्तोष प्रकट करने का विचार उसके मन में कभी नहीं आया था। परन्तु अब वह इस ओर से बिल्कुल उदासीन था।

उसने न खाया और न ही कुछ पिया। वरण चुपचाप बिना हिले डुले लेटा रहा।

मेरे लिये यह सब बराबर है। जब उससे पूछा गया तो वह सोचने लगा --मैं उत्तर नहीं दूंगा—मेरे लिये सब एक समान है।

खाने के पश्चात मिखेल एवीरिच उसके लिये चौथाई पौंड चाय और एक पौंड शहद लाया। डुश्का भी आई और पूरे एक घंटे तक चारपाई के पास पीड़ा भरी नीरस मुद्रा बनाये खड़ी रही। डाक्टर खोबाफ भी उसे देखने आया। वह अपने साथ कुछ दवाइयां लाया और नौकर को आज्ञा दी कि वह वार्ड में धूप जला कर सुगन्धि फैला दे।

शाम के समय एँड्री येफीमिच मिर्गी का दौरा पड़ने से मर गया। पहले पहल उसे सर्दी लगी और उसने ज्वर अनुभव किया। सड़ी हुई गोभी या सड़े हुये अंडों की भांति की कोई चीज उसे अपने सारे शरीर के अन्दर आती

हुई आग नहीं जो पेट से आती हुई सिर में और फिर आंखों और कानों में फैल गई। एक हरी फिल्म उसकी आंखों के सामने घूम उठी। ऐंड्री येफीमिच ने अनुभव किया कि उसका अन्त काल आ पहुंचा है। उसे याद आया कि आईवन डिमिटी मिखेल ऐवीरिंच और हजारों दूसरे लोग अमरता में विश्वास करते हैं। परन्तु उसे अमरता की इच्छा नहीं है और केवल क्षण भर के लिये इस विषय में सोचा। असाधारण रूप से सुन्दर और कोमल हिरणों के झुंड का विचार उसके मस्तिष्क में आया क्योंकि उसने कुछ दिन पहले इस विषय में पढ़ा था। तब एक स्त्री ने एक रजिस्टर्ड लिफाफा उसके हाथ में थमा दिया। मिखेल ऐवीरिंच ने कुछ कहा और तब सब कुछ समाप्त हो गया और ऐंड्री येफीमिच की मृत्यु हो गई।

नौकर अन्दर आये और उसके कंधे और टांगे पकड़ कर उसे गिरजे में ले गये। तब वह अपनी आंखें खोले वहां मेज पर लेटा रहा और रात को चाँद उसके ऊपर चमकता रहा। प्रातःकाल सर्जे सर्जेच आया और उसने ईसा की मूर्ति के सामने बड़े धार्मिक ढंग से प्रार्थना की और अपने पुराने अफसर की आंखें बन्द कर दीं।

अगले दिन येफीमिच को दबा दिया गया। केवल मिखेल ऐवीरिंच और दार्यूश्का ही उस समय वहां उपस्थित थे।